शनिवार

28 नवम्बर 2026

● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 307
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

खाई में गिरी कार, 7 लोगों की मौत!

नगर संवाददाता

देहरादून। राज्य के पौड़ी गढ़वाल जिले में शनिवार को भीषण सड़क हादसा हुआ है। रिखणीखाल ब्लॉक के कलवाड़ी क्षेत्र में एक ईको कार अनियंत्रित होकर गहरी खाई में जा गिरी। हादसे में 7 लोगों की मौत और कई लोगों के गंभीर रूप से घायल होने की सूचना है।

हादसा सिद्धखाल-कलवाड़ी-सतपुली मार्ग पर हुआ। बताया जा रहा है कि चालक का वाहन से नियंत्रण बिगड़ने के बाद कार खाई में जा गिरी। दुर्घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन की टीमें मौके के लिए रवाना हो गईं। राहत एवं बचाव कार्य शुरू कर घायलों को बाहर निकालने की कोशिश की गई।

दुर्घटना में वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। राहत दल को घायलों और मृतकों को बाहर निकालने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था की जा रही है। हादसे के कारणों की जांच की जा रही है। दुर्घटना में मृतकों और घायलों की संख्या को लेकर अभी आधिकारिक पुष्टि का इंतजार है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने जनपद पौड़ी गढ़वाल के रिखणीखाल क्षेत्र के कलवाड़ी में हुई भीषण सड़क दुर्घटना पर गहरा दु:ख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने दुर्घटना में दिवंगत हुए लोगों के शोकाकुल परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त



करते हुए ईश्वर से दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान देने तथा शोक संतप्त परिजनों को इस असीम दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन को तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्यों में तेजी लाने तथा घायलों को समुचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों को एयरलिफ्ट कर उच्च चिकित्सा केंद्रों में पहुंचाने के भी निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने ईश्वर से सभी घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है।

फूड डिलीवरी की आड़ में खाद्य सुरक्षा से खिलवाड़



◆दून में गली-गली फल-फूल रहा काला कारोबार, खाद्य सुरक्षा से खिलवाड़ का खेल

◆मोबाइल पर आर्डर, घर तक डिलीवरी, पर्दे के पीछे कौन चला रहा है काला कारोबार

◆बिना पहचान, बिना निगरानी, बिना जवाबदेही चल रहे ठिकाने की व्यवस्था पर सवाल

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। राजधानी देहरादून में आनलाइन फूड डिलीवरी का कारोबार तेजी से फैल रहा है। मोबाइल फोन पर एक क्लिक और मनपसंद खाना दरवाजे पर हाजिर। भागदौड़ भरी जिंदगी में यह सुविधा लोगों की जरूरत बन चुकी है, लेकिन इसी सुविधा की आड़ में एक ऐसा कारोबार भी पनप रहा है, जिसकी असल दुनिया उपभोक्ताओं की नजरों से छिपी हुई है। शहर की गलियों, रिहायशी इलाकों और संकरी बस्तियों में आनलाइन खाना तैयार करने और सप्लाई करने वाले कई ठिकानों की कार्यप्रणाली को लेकर सवाल उठ रहे हैं। इन ठिकानों की वास्तविक पहचान, रसोई की स्वच्छता, खाद्य सुरक्षा मानकों और प्रशासनिक निगरानी को लेकर गंभीर पड़ताल की जरूरत है।

आनलाइन फूड डिलीवरी ने खानपान के कारोबार का चेहरा बदल दिया है। अब हर कारोबार के लिए मुख्य सड़क पर दुकान, बड़ा रेस्टोरेंट या आकर्षक बोर्ड होना जरूरी नहीं रह गया है। छोटी-सी जगह से भी आनलाइन आर्डर लेकर खाना तैयार और सप्लाई किया जा सकता है। क्लाउड किचन की अवधारणा ने इस कारोबार को विस्तार दिया है। लेकिन इसी व्यवस्था में यदि नियमों की अनदेखी हो रही है तो उपभोक्ता के लिए यह सुविधा कभी भी स्वास्थ्य संबंधी जोखिम में बदल सकती है। इस कारोबार का सबसे बड़ा सवाल पारदर्शिता का है। ग्राहक मोबाइल एप पर रेस्टोरेंट का नाम, मेन्यू, तस्वीरें और रेटिंग देखकर खाना मंगाता है। लेकिन क्या उसे यह जानकारी होती है कि खाना वास्तव में किस स्थान पर तैयार हो रहा है? क्या उस रसोई का निरीक्षण हुआ है? वहां साफ-सफाई और खाद्य सुरक्षा के मानकों का पालन किया जा रहा है या नहीं? किसी शिकायत की स्थिति में जिम्मेदार व्यक्ति तक पहुंचना कितना आसान है?

एक ही रसोई से अलग-अलग नामों से कई ब्रांड संचालित होने की व्यवस्था भी जांच का विषय है। डिजिटल दुनिया में रेस्टोरेंट का नाम और पहचान बनाना आसान है, लेकिन उस पहचान के पीछे वास्तविक कारोबारी और रसोई की स्थिति की जांच उतनी ही जरूरी है। खाद्य कारोबार के लिए खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण के नियम लागू होते हैं। खाद्य कारोबार करने वाले प्रतिष्ठानों के लिए निर्धारित परिस्थितियों में पंजीकरण या लाइसेंस अनिवार्य है। इसके साथ स्वच्छता, खाद्य पदार्थों के सुरक्षित भंडारण, गुणवत्ता और निर्धारित मानकों का पालन भी जरूरी है। सवाल यह है कि देहरादून में संचालित आनलाइन किचन और फूड डिलीवरी ठिकानों की नियमित जांच कितनी हो रही है? कितने प्रतिष्ठानों का पंजीकरण है? कितनों के पास वैध लाइसेंस हैं? कितने ठिकानों का निरीक्षण किया गया और अनियमितता मिलने पर क्या कार्रवाई हुई? इन सवालों के जवाब सार्वजनिक होने चाहिए।

आनलाइन खाना मंगाने वाला उपभोक्ता केवल स्वाद नहीं खरीदता, वह खाद्य पदार्थ की गुणवत्ता और सुरक्षा पर भी भरोसा करता है। लेकिन यदि रसोई में स्वच्छता नहीं है, खाद्य सामग्री के रख-रखाव में लापरवाही है या एक्सपायरी सामग्री का इस्तेमाल हो रहा है तो इस भरोसे की कीमत उपभोक्ता को अपनी सेहत से चुकानी पड़ सकती है। यहां जिम्मेदारी केवल खाना बनाने वाले की नहीं है। आनलाइन प्लेटफार्म की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। प्लेटफार्म पर सूचीबद्ध प्रतिष्ठानों की कारोबारी पहचान, आवश्यक दस्तावेज और शिकायत निवारण की व्यवस्था कितनी प्रभावी है, इसकी भी जांच होनी चाहिए। देहरादून में आनलाइन फूड कारोबार के तेजी से विस्तार के बीच खाद्य सुरक्षा विभाग, नगर निगम और जिला प्रशासन के बीच समन्वित निगरानी जरूरी है। रिहायशी इलाकों में संचालित व्यावसायिक रसोई की वैधानिक स्थिति, अग्नि सुरक्षा, कचरा निस्तारण और खाद्य सुरक्षा मानकों की जांच होनी चाहिए।

▶▶ शेष पृष्ठ 4 पर

दून वैली मेल

संपादकीय

2029 से पहले बदलेगा चुनावी नक्शा

देश की राजनीति एक ऐसे मोड़ की ओर बढ़ रही है, जहां 2029 का लोकसभा चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन या सत्ता की वापसी का मुकाबला नहीं होगा, बल्कि भारतीय राजनीति के भविष्य की दिशा भी तय करेगा। अगले तीन वर्षों में देश का चुनावी नक्शा बदलने की जमीन तैयार हो सकती है। परिसीमन, महिला आरक्षण, जातीय जनगणना, क्षेत्रीय दलों की भूमिका और राजनीतिक गठबंधनों का नया स्वरूप आने वाले दिनों में चुनावी राजनीति की पूरी तस्वीर बदल सकता है। सवाल केवल यह नहीं है कि 2029 में केंद्र की सत्ता किसके हाथ में होगी, बल्कि यह भी है कि उस चुनाव तक पहुंचते-पहुंचते भारतीय लोकतंत्र का राजनीतिक भूगोल कितना बदल चुका होगा। इस बदलाव की सबसे बड़ी धुरी लोकसभा सीटों का संभावित परिसीमन है। संसद में राज्यों के प्रतिनिधित्व का सवाल लंबे समय से राजनीतिक बहस के केंद्र में है। जनसंख्या के आधार पर सीटों के पुनर्निर्धारण की प्रक्रिया आगे बढ़ती है तो देश के अलग-अलग राज्यों के बीच राजनीतिक प्रतिनिधित्व का संतुलन प्रभावित हो सकता है। विशेष रूप से उत्तर और दक्षिण भारत के बीच प्रतिनिधित्व का सवाल एक बड़ी राजनीतिक चुनौती बन सकता है। जिन राज्यों ने जनसंख्या नियंत्रण में बेहतर प्रदर्शन किया, उनके सामने यह आशंका है कि कहीं उन्हें इसका राजनीतिक नुकसान न उठाना पड़े। वहीं अधिक आबादी वाले राज्यों की संसदीय हिस्सेदारी बढ़ने की संभावना नए शक्ति संतुलन को जन्म दे सकती है। यह केवल सीटों की संख्या का मामला नहीं है। इसके साथ राज्यों की राजनीतिक ताकत, केंद्र में उनकी आवाज और राष्ट्रीय नीतियों पर उनके प्रभाव का सवाल भी जुड़ा है। भारत जैसे संघीय ढांचे वाले देश में प्रतिनिधित्व का संतुलन बिगड़ना केवल राजनीतिक विवाद नहीं, बल्कि संघीय व्यवस्था के सामने भी गंभीर चुनौती बन सकता है। इसलिए परिसीमन की प्रक्रिया में सभी राज्यों के हितों और संवैधानिक संतुलन का ध्यान रखना अनिवार्य होगा। महिला आरक्षण भी 2029 की राजनीति को नई दिशा देने वाला मुद्दा है। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू होने की प्रक्रिया आगे बढ़ती है तो राजनीतिक दलों को टिकट वितरण की अपनी पुरानी रणनीति बदलनी पड़ेगी। वर्षों से महिला सशक्तीकरण की बात करने वाले दलों की असली परीक्षा टिकटों के बंटवारे में होगी। महिलाओं को केवल चुनावी सभाओं में भीड़ जुटाने और राजनीतिक नारों तक सीमित रखने की परंपरा बदलेगी या नहीं, यह देखना दिलचस्प होगा। दूसरी ओर जातीय जनगणना का सवाल भी राष्ट्रीय राजनीति के समीकरण बदलने की क्षमता रखता है। सामाजिक न्याय, आरक्षण और राजनीतिक हिस्सेदारी की बहस आने वाले समय में और तेज होगी। विपक्ष इसे सामाजिक प्रतिनिधित्व का मुद्दा बनाएगा तो सत्ता पक्ष के सामने भी अपनी राजनीतिक और नीतिगत स्थिति स्पष्ट करने की चुनौती होगी। जातीय आंकड़ों के आधार पर हिस्सेदारी की मांग तेज हुई तो चुनावी राजनीति का पारंपरिक विकास बनाम राष्ट्रवाद का विमर्श नए सवालों से घिर सकता है। राजनीतिक दलों के सामने भी अब पुरानी चुनावी रणनीतियों से आगे निकलने की चुनौती है। भाजपा के लिए लगातार तीसरी बार केंद्र की सत्ता में वापसी की कोशिश के साथ अपने सामाजिक और भौगोलिक जनाधार का विस्तार बड़ी कसौटी होगी। वहीं कांग्रेस और विपक्षी दलों के सामने केवल भाजपा विरोध के आधार पर एकजुटता दिखाने के बजाय साझा नेतृत्व, साझा कार्यक्रम और सीटों के तालमेल का विश्वसनीय विकल्प पेश करने की चुनौती है। क्षेत्रीय दल इस मुकाबले में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र और अन्य राज्यों के राजनीतिक समीकरण राष्ट्रीय सत्ता की दिशा तय करने में अहम साबित होंगे। इस पूरे परिदृश्य में छोटे राज्यों और क्षेत्रीय आकांक्षाओं का सवाल भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। उत्तराखंड जैसे राज्यों के सामने अपनी राजनीतिक हिस्सेदारी और विकास संबंधी जरूरतों को राष्ट्रीय विमर्श में मजबूती से रखने की चुनौती होगी। पहाड़ की भौगोलिक परिस्थितियां, पलायन, सीमांत क्षेत्रों की सुरक्षा, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं के सवाल केवल राज्य की राजनीति तक सीमित नहीं रहने चाहिए। लोकसभा में प्रतिनिधित्व की बहस के बीच यह सुनिश्चित करना भी जरूरी है कि कम आबादी और दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों वाले राज्यों की आवाज कमजोर न पड़े। दरअसल, 2029 से पहले देश की राजनीति में जो बदलाव दिखाई दे रहे हैं, वह केवल चुनावी रणनीतियों तक सीमित नहीं हैं। यह सत्ता के सामाजिक आधार, राज्यों की राजनीतिक हैसियत और लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व की नई परिभाषा तय करने का दौर है। ऐसे में राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि लोकतंत्र केवल बहुमत हासिल करने का नाम नहीं है। इसमें हर क्षेत्र, हर वर्ग और हर राज्य की आवाज को उचित स्थान मिलना भी उतना ही जरूरी है। भारत का चुनावी नक्शा बदल सकता है, लेकिन यह बदलाव किसी एक दल की राजनीतिक सुविधा या सत्ता की गणित से तय नहीं होना चाहिए। परिसीमन हो या महिला आरक्षण, जातीय जनगणना हो या संघीय ढांचे में राज्यों की हिस्सेदारी, हर निर्णय के केंद्र में लोकतांत्रिक न्याय और संवैधानिक संतुलन होना चाहिए। 2029 की चुनावी बिसात बिछने से पहले देश को इन सवालों के जवाब तलाशने होंगे। क्योंकि चुनावी नक्शा बदलना आसान है, लेकिन लोकतंत्र में विश्वास और प्रतिनिधित्व का संतुलन बनाए रखना कहीं अधिक बड़ी जिम्मेदारी है।

चुनावी इतिहास में 'सत्ता' की अदला-बदली

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड राज्य बने 26 साल हो चुके हैं। इन वर्षों में प्रदेश ने राजनीतिक नेतृत्व बदले, सरकारें बदलीं, सत्ता के चेहरे बदले और चुनावी मुद्दों ने भी कई करवटें लीं, लेकिन एक चीज लगभग जस की तस बनी हुई है। प्रदेश की सियासत की धुरी आज भी भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के बीच ही घूमती है। विधानसभा चुनाव हो या लोकसभा चुनाव, राजनीतिक बहस हो या सत्ता का संघर्ष, दोनों राष्ट्रीय दलों के बीच ही मुकाबले की तस्वीर बनती रही है। सवाल यह है कि आखिर उत्तराखंड की अपनी क्षेत्रीय राजनीतिक ताकत एक मजबूत विकल्प क्यों नहीं बन पाई?

नौ नवंबर 2000 को अलग राज्य बनने के बाद उत्तराखंड की राजनीति से लोगों को बड़ी उम्मीदें थीं। राज्य आंदोलन के दौरान जिस राजनीतिक चेतना और क्षेत्रीय आकांक्षाओं ने जन्म लिया था, उनसे उम्मीद थी कि उत्तराखंड की अपनी राजनीतिक पहचान भी मजबूत होगी। पहाड़ के सवाल, जल-जंगल-जमीन, रोजगार, पलायन, गैरसैंण और स्थानीय संसाधनों पर अधिकार प्रदेश की राजनीति की केंद्रीय धुरी बनेंगे। लेकिन सत्ता की राजनीति धीरे-धीरे दो राष्ट्रीय दलों के बीच सिमटती चली गई। प्रदेश के पहले विधानसभा चुनाव में वर्ष 2002 में कांग्रेस ने 36 सीटें जीतकर सरकार बनाई, जबकि भाजपा को 19 सीटों पर संतोष करना पड़ा। वर्ष 2007 में भाजपा ने वापसी की और सरकार बनाई। वर्ष 2012 में कांग्रेस 32 और भाजपा 31 सीटों के साथ लगभग बराबरी पर रहीं। इसके बाद 2017 में भाजपा ने 57 सीटें जीतकर बड़ी सफलता हासिल की। वर्ष 2022 में भी भाजपा 47 सीटें जीतकर लगातार दूसरी बार सत्ता में लौटी। इस तरह 2022 का चुनाव उत्तराखंड की उस स्थापित परंपरा में बड़ा बदलाव लेकर आया, जिसमें हर पांच साल में सरकार बदलती रही थी।

इन नतीजों से स्पष्ट है कि प्रदेश की चुनावी प्रतिस्पर्धा का मुख्य केंद्र भाजपा और कांग्रेस ही रहे हैं। तीसरे राजनीतिक विकल्प के रूप में क्षेत्रीय दलों की मौजूदगी तो रही, लेकिन वे सत्ता की मुख्य धुरी को प्रभावित करने वाली ताकत नहीं बन सके। उत्तराखंड क्रांति दल राज्य आंदोलन की राजनीतिक अभिव्यक्ति था। अलग राज्य की मांग को राजनीतिक मंच देने में उसकी अहम भूमिका रही। लेकिन राज्य गठन के बाद वह आंदोलन की व्यापक जनभावना को स्थायी चुनावी समर्थन में तब्दील नहीं कर पाया। संगठनात्मक कमजोरियां, नेतृत्व के अंतर्विरोध और बदलते राजनीतिक समीकरण उसकी राह में चुनौती बने रहे।

◆उत्तराखंड राज्य के 26 साल के राजनीतिक सफर में क्षेत्रीय विकल्प क्यों नहीं बन पाया तीसरी ताकत
◆सत्ता की अदला-बदली से लेकर चुनावी वर्चस्व तक, दो राष्ट्रीय दलों के इर्द-गिर्द सिमटी प्रदेश की राजनीति
◆अब तक क्यों नहीं मिला तीसरा राजनीतिक विकल्प, सत्ता की लड़ाई दो दलों की, सवाल पहाड़ के भविष्य का

आज भी गैरसैंण राजधानी, पहाड़ों से पलायन, स्थानीय युवाओं को रोजगार, भू-कानून और मूल निवास जैसे मुद्दे प्रदेश की राजनीति में मौजूद हैं। विडंबना यह है कि इन मुद्दों पर जनभावनाएं मजबूत होने के बावजूद कोई क्षेत्रीय दल व्यापक राजनीतिक विकल्प के रूप में स्थापित नहीं हो सका। क्षेत्रीय मुद्दे राष्ट्रीय दलों के चुनावी घोषणापत्रों और राजनीतिक भाषणों का हिस्सा तो बनते रहे, लेकिन उनकी राजनीति पर स्थायी क्षेत्रीय नेतृत्व की छाप नहीं बन पाई। उत्तराखंड में तीसरी राजनीतिक ताकत बनने की कोशिशें समय-समय पर होती रही हैं। बसपा ने कुछ क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। आम आदमी पार्टी ने भी 2022 के विधानसभा चुनाव में सभी सीटों पर चुनाव लड़कर विकल्प बनने की कोशिश की, लेकिन उसे कोई विधानसभा सीट नहीं मिली। क्षेत्रीय दलों और नए राजनीतिक संगठनों के सामने सबसे बड़ी चुनौती पूरे प्रदेश में संगठन खड़ा करने, स्थानीय नेतृत्व को एक मंच पर लाने और मतदाताओं का भरोसा हासिल करने की रही है।

इसके अलावा भाजपा और कांग्रेस के पास राष्ट्रीय स्तर का संगठन, संसाधन, नेतृत्व और चुनावी नेटवर्क है। यही वजह है कि तीसरी ताकत के लिए इनके मुकाबले प्रदेशव्यापी राजनीतिक आधार तैयार करना आसान नहीं रहा। अब प्रदेश की राजनीति 2027 के विधानसभा चुनाव की ओर बढ़ रही है। भाजपा लगातार तीसरी बार सत्ता

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

70 सीटें, एक मंच और साझा उम्मीदवार

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में भाजपा और कांग्रेस के बीच सत्ता की लड़ाई के बीच उत्तराखंड क्रांति दल ने तीसरा राजनीतिक विकल्प खड़ा करने की कवायद तेज कर दी है। राज्य आंदोलन की कोख से निकला यूकेडी अब छोटे क्षेत्रीय दलों, सामाजिक संगठनों और निर्दलीय नेताओं को एक मंच पर लाने की कोशिश में जुटा है। मकसद साफ है- प्रदेश की राजनीति में राष्ट्रीय दलों के वर्चस्व को चुनौती देना और उत्तराखंड के मुद्दों पर आधारित एक साझा राजनीतिक ताकत तैयार करना। लेकिन इस कोशिश के सामने सबसे बड़ी चुनौती अलग-अलग राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं, नेतृत्व के दावों और बिखरे जनाधार को एक सूत्र में पिरोने की है।

2027 के विधानसभा चुनाव की आहट के साथ प्रदेश में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। भाजपा और कांग्रेस जहां अपनी चुनावी रणनीति को धार देने में जुटी हैं, वहीं यूकेडी क्षेत्रीय राजनीति की जमीन तैयार करने में लगा है। पार्टी का मानना है कि छोटे दलों और निर्दलीय प्रत्याशियों के अलग-अलग चुनाव लड़ने से क्षेत्रीय मतों का बिखराव होता है। इसका सीधा लाभ राष्ट्रीय दलों को मिलता है। यदि क्षेत्रीय ताकतें एक मंच पर आ जाएं और प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में एक साझा उम्मीदवार उतारा जाए तो चुनावी मुकाबले में एक नया समीकरण सामने आ सकता है।

इसी रणनीति के तहत देहरादून में मंथन 2027-क्षेत्रीय एकता से उत्तराखंड का राजनीतिक विकल्प कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 14 क्षेत्रीय दलों और संगठनों ने भागीदारी की। उत्तराखंड परिवर्तन पार्टी, स्वाभिमान मोर्चा, राष्ट्रवादी रीजनल पार्टी, उत्तराखंड समानता पार्टी, हिमालय क्रांति पार्टी, विकास पार्टी और राज्य आंदोलनकारी मंच सहित विभिन्न संगठनों की भागीदारी को क्षेत्रीय एकता की दिशा में प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। यूकेडी की कोशिश है कि इन संगठनों को केवल चुनावी गठबंधन तक सीमित न रखा जाए, बल्कि प्रदेश के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक सवालों पर भी साझा सहमति बनाई जाए। इसके लिए निर्दलीय नेताओं और उन राजनीतिक चेहरों को भी साथ लाने की रणनीति है, जो राष्ट्रीय दलों से अलग होकर क्षेत्रीय मुद्दों पर राजनीति करना चाहते हैं।

◆छोटे दलों और निर्दलीयों को एक मंच पर लाने में जुटी यूकेडी
◆भाजपा-कांग्रेस के मुकाबले क्षेत्रीय ताकत खड़ी करने की कवायद
◆तीसरे राजनीतिक विकल्प की तलाश, बिखरे जनाधार की है चुनौती

क्षेत्रीय एकता की इस कवायद का सबसे महत्वपूर्ण पहलू विधानसभा की सभी 70 सीटों पर साझा उम्मीदवार उतारने की संभावना है। यूकेडी का मानना है कि क्षेत्रीय दलों के बीच सीटों को लेकर सहमति बन जाए तो मतों के बंटवारे को रोका जा सकता है। हालांकि, इसके लिए प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में उम्मीदवार के चयन पर सहमति बनाना आसान नहीं होगा। किस दल को कितनी सीटें मिलेंगी? किस नेता को उम्मीदवार बनाया जाएगा? जिन सीटों पर एक से अधिक दलों के नेताओं की दावेदारी होगी, वहां सहमति कैसे बनेगी? ये ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब गठबंधन की सफलता तय करेगा। केवल मंच साझा कर लेने से राजनीतिक एकता नहीं बनती। असली परीक्षा सीटों के बंटवारे और चुनावी मैदान में एक-दूसरे के समर्थन की होगी।

यूकेडी के लिए यह पहल अपनी राजनीतिक विरासत को फिर से स्थापित करने की कोशिश भी है। उत्तराखंड राज्य आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले इस दल के सामने लंबे समय से अपनी खोई राजनीतिक जमीन वापस हासिल करने की चुनौती रही है। अलग राज्य की मांग को जनांदोलन बनाने वाला क्षेत्रीय दल राज्य गठन के बाद सत्ता की मुख्यधारा में

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

पांच साल से बंद सीवर लाइन, भीमगोड़ा कुंड में गंदे पानी का रिसाव

हरिद्वार(आरएनएस)। प्राचीन तीर्थस्थल भीमगोड़ा कुंड के आसपास पांच साल से सीवर की समस्या बनी हुई है। शंकर आश्रम से श्रीकृष्ण कृपा धाम तक जाने वाली सीवर लाइन क्षतिग्रस्त होने के कारण बंद पड़ी है। आरोप है कि लाइन में जमा मलयुक्त पानी ओवरफ्लो होकर गंगा में जाने वाले नाले में पहुंच रहा है। नमामि गंगे योजना के तहत नई सीवर लाइन बिछाए जाने के बावजूद जल संस्थान की लिखित अनुमति नहीं मिलने से इसे अब तक चालू नहीं किया जा सका है। स्थिति यह है कि भीमगोड़ा कुंड के पास निर्माणाधीन नाले में मलयुक्त पानी भरा हुआ है और इसके रिसाव से कुंड के भी दूषित होने की आशंका बनी हुई है। पूर्व पार्षद लखन लाल चौहान, प्रशांत शर्मा, आशीष, रोहित और सुमित सहित स्थानीय लोगों का कहना है कि पांच साल से समस्या झेल रहे क्षेत्रवासियों को अब तक राहत नहीं मिली है। नई सीवर लाइन बिछने के बाद उम्मीद जगी थी कि समस्या का समाधान हो जाएगा, लेकिन विभागीय अनुमति के इंतजार में लाइन चालू नहीं हो पा रही है। उनका कहना है कि धार्मिक महत्व वाले भीमगोड़ा कुंड के आसपास इस तरह गंदा पानी जमा होना चिंता का विषय है। विभाग को तत्काल लाइन चालू कराकर सीवर की समस्या का स्थायी समाधान करना चाहिए। डीएम मयूर दीक्षित ने बताया कि धार्मिक स्थलों की स्वच्छता और गंगा की निर्मलता प्रशासन की प्राथमिकता है। सीवर लाइन से जुड़ी समस्या का संबंधित विभाग से परीक्षण कराया जाएगा। अधिकारियों को आपसी समन्वय से जल्द समाधान निकालने और नई सीवर लाइन को चालू कराने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए जाएंगे।

विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण और चरित्र निर्माण का दिया संदेश

विकासनगर(आरएनएस)। राजकीय इंटर कॉलेज मेहरावना में शुक्रवार को करियर काउंसलिंग एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा के अवसरों, विषय चयन, कौशल विकास और रोजगार की संभावनाओं की जानकारी दी गई।कार्यक्रम की मुख्य वक्ता कॉलेज की अंग्रेजी विभाग की सहायक प्राध्यापक रेखा ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, कौशल आधारित और बहुविषयक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी रुचि, क्षमता और लक्ष्य के अनुरूप विषय एवं करियर चुनने के लिए प्रेरित किया। साथ ही उच्च शिक्षा और रोजगार के विभिन्न अवसरों की जानकारी देते हुए निरंतर अध्ययन के महत्व पर जोर दिया। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मेहरावना के फार्मेसी ऑफिसर राजेंद्र सिंह चौहान ने भी विद्यार्थियों के साथ अपने अनुभव साझा किए और करियर से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य दीवान सिंह नेगी, शिक्षक नरेश चंद्र डोभाल, पंकज हटवाल और मुकेश तोमर मौजूद रहे।

बैंकों की मनमानी और कर्ज वसूली के नाम पर उत्पीड़न पर रोक लगे

रुद्रपुर(आरएनएस)। बैंकों और निजी वित्तीय संस्थानों की कथित मनमानी, कर्ज वसूली के नाम पर आम नागरिकों के उत्पीड़न और सरफेसी एक्ट के दुरुपयोग पर रोक लगाने की मांग को लेकर शुक्रवार को एडीएम विनोद कुमार को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में स्वाधीन भारत विधिक सत्याग्रह के पदाधिकारियों ने आरोप लगाया गया कि बैंक और वित्तीय संस्थान बिना उचित कानूनी प्रक्रिया का पालन किए मकान, दुकान, कृषि भूमि और आजीविका के साधनों पर कब्जे की कार्रवाई कर रहे हैं। इससे आम नागरिकों के सामने आर्थिक और सामाजिक संकट खड़ा हो रहा है। ज्ञापन में कहा गया कि कई बैंकिंग और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां तथा सहकारी संस्थाएं भी सरफेसी एक्ट का लाभ उठाकर लोगों के घरों और संपत्तियों पर कार्रवाई कर रही हैं, जबकि उन्हें इस अधिनियम के तहत कार्रवाई करने का वैधानिक अधिकार प्राप्त नहीं है। इसे सत्ता के दुरुपयोग और आर्थिक आतंक का मामला बताते हुए तत्काल रोक लगाने की मांग की गई। ज्ञापन में कहा गया कि आम नागरिकों के साथ कठोरता और बड़े कॉरपोरेट कर्जदारों के प्रति नरमी बरतना समानता के अधिकार के विपरीत है। वहीं, मकान और दुकान जब्त करने की कार्रवाई से लोगों के आवास और आजीविका के अधिकार प्रभावित हो रहे हैं। संपत्ति के संवैधानिक अधिकार का भी उल्लंघन हो रहा है। ज्ञापन सौंपने वालों में भागीरथ, कमलेश शर्मा, रामनरेश, राजपाल सिंह, राजीव गंगवार, बलिस्टर, नरेंद्र, संतोष रस्तोगी, धर्मवीर, प्रेमपाल, नरेंद्र सिंह, गेंदन लाल आदि शामिल रहे।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

प्रमाण पत्रों के लिए भटक रहे लोग, सीएससी संचालकों ने दिया तहसील में धरना

रुद्रपुर(आरएनएस)। तहसील क्षेत्र में जाति, स्थायी निवास, आय सहित अन्य जरूरी प्रमाण पत्रों के निस्तारण में हो रही देरी के विरोध में शुक्रवार को सीएससी वेलफेयर सोसाइटी ऊधमसिंह नगर के बैनर तले सीएससी संचालकों ने तहसील परिसर में सांकेतिक एक दिवसीय धरना-प्रदर्शन किया।

जिला अध्यक्ष सुरजीत बत्रा के नेतृत्व में प्रदर्शन कर रहे संचालकों ने प्रशासन से प्रमाण पत्रों का निस्तारण जल्द शुरू कराने की मांग उठाई। सीएससी संचालकों का कहना है कि पटवारियों की हड़ताल के चलते प्रमाण पत्रों से संबंधित कार्य पूरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। इससे छात्र-छात्राओं सहित आम लोगों को सरकारी योजनाओं, छात्रवृत्ति और अन्य जरूरी सुविधाओं का लाभ लेने में परेशानी हो रही है।कई लोग अपने प्रमाण पत्र बनवाने के लिए तहसील के चक्कर काटने को मजबूर हैं। संचालकों ने बताया कि 23 नवंबर को इस समस्या को लेकर तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा गया था। इसमें तीन दिन के भीतर प्रमाण पत्रों के निस्तारण का कार्य शुरू कराने की मांग की गई थी, लेकिन निर्धारित समय बीतने के बाद भी कोई समाधान नहीं हुआ। इसके चलते शुक्रवार को धरना देने का निर्णय लिया गया। प्रदर्शन के दौरान संचालकों ने तहसीलदार लीना चंद्रा को दोबारा ज्ञापन सौंपा।तहसीलदार ने आश्वासन दिया कि वह उच्चाधिकारियों से वार्ता कर जल्द समस्या का समाधान कराने का प्रयास करेंगी। जिला अध्यक्ष सुरजीत बत्रा ने कहा कि प्रमाण पत्रों का निस्तारण नहीं होने से सीएससी संचालकों के साथ आम जनता भी परेशान है। जिला महामंत्री कैलाश शर्मा ने कहा कि पटवारियों की हड़ताल के कारण विद्यार्थियों और सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों को सबसे अधिक दिक्कतें उठानी पड़ रही हैं। धरने को समर्थन देने पहुंचे आजाद समाज पार्टी के विधानसभा अध्यक्ष शाहेरुम उर्फ टोनी पठान ने भाजपा सरकार पर निशाना साधा और प्रशासन से जल्द समाधान की मांग की। वहीं यूथ कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुमित्तर भुल्लर ने भी संचालकों को समर्थन दिया। उन्होंने कहा कि प्रमाण पत्रों के अभाव में लोगों के छात्रवृत्ति और रोजगार संबंधी कार्य प्रभावित हो रहे हैं। संचालकों ने चेतावनी दी कि शीघ्र समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन को व्यापक रूप दिया जाएगा। इस दौरान बड़ी संख्या में सीएससी संचालक मौजूद रहे। धरना देने वालों में इस दौरान राजकुमार वर्मा, प्रमोद सैनी, संजय सैनी, रवि पाठक, ठाकुर रामपाल सिंह, मनोज सरकार, हिमांशु सती, सागर ,आरिफ समेत काफी संख्या में सीएससी संचालक मौजूद रहे।

चोरी हुए 18 बंडल सरिया के साथ दो गिरफ्तार

रुद्रपुर(आरएनएस)। आनंदपुर मोड़ स्थित महाकाल कंस्ट्रक्शन प्लांट में हुई सरिया चोरी का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने 18 बंडल (12 मिमी) सरिया के साथ दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। राजेन्द्र सिंह बिष्ट पुत्र मोहन सिंह बिष्ट निवासी ग्राम शांतिपुरी ने पुलिस को तहरीर देकर आरोप लगाया था कि उनका प्लांट श्री महाकाल कंस्ट्रक्शन आनंदपुर मोड़ (सिडकुल रोड)पर स्थित है। वहां 18 कुतंल सरिया (20 बंडल) रखा हुआ था। गुरुवार को गार्ड को वहां से सरिया गायब मिला। राजेन्द्र सिंह बिष्ट की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज किया।पुलिस टीम ने शुक्रवार को सुनहरी गार्डन आम के बाग से दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों ने अपना नाम मो. यूनुस पुत्र अब्दुल मजीद निवासी कुरैशी मोहल्ला वार्ड 18, किच्छा और नदीम पुत्र साबिर निवासी कब्रिस्तान मोहल्ला, वार्ड 15, किच्छा बताया।

पीसीएस परीक्षार्थियों के लिए अतिरिक्त बसें चलाएगा रोडवेज

हल्द्वानी(आरएनएस)। उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की अपर पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों की सुविधा के लिए उत्तराखंड परिवहन निगम प्रमुख रूटों पर अतिरिक्त बसें चलाएगा।

परीक्षा के दिन बस अड्डों पर संभावित भीड़ को देखते हुए बसों की संख्या और फेरे बढ़ाने की तैयारी की गई है। यात्रियों की संख्या बढ़ने पर डिपो स्तर पर रिजर्व बसों को भी तत्काल संचालन में लगाया जाएगा। रविवार को दो पालियों में सुबह 10 से 12 बजे और दोपहर दो से चार बजे तक परीक्षा आयोजित होगी। प्रदेश के 18 प्रमुख शहरों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। कुमाऊं और गढ़वाल के पर्वतीय जिलों के अलावा मैदानी क्षेत्रों और पड़ोसी राज्यों से भी बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों के परीक्षा केंद्रों वाले शहरों में पहुंचने की संभावना है। कई अभ्यर्थी शुक्रवार शाम और शनिवार से ही यात्रा शुरू करेंगे। इसे देखते हुए निगम प्रबंधन ने सभी डिपो को सतर्क रहने के निर्देश दिए हैं। हल्द्वानी, काठगोदाम, रुद्रपुर, देहरादून, हरिद्वार और ऋषिकेश समेत प्रमुख बस अड्डों पर यात्रियों की संख्या के अनुसार अतिरिक्त बसें संचालित की जाएंगी। हल्द्वानी डिपो के एआरएम संजय पांडे ने बताया कि पर्वतीय क्षेत्रों से मैदान और एक जिले से दूसरे जिले में परीक्षा देने जाने वाले अभ्यर्थियों के लिए सुबह तड़के से बसों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि वे समय से परीक्षा केंद्र पहुंच सकें। परीक्षा को देखते हुए शनिवार और रविवार को चालक-परिचालकों के अनावश्यक अवकाश पर रोक लगाई गई है। बस अड्डों पर कर्मचारियों की ड्यूटी भी लगाई गई है, जिससे भीड़ बढ़ने पर तत्काल बसें रवाना की जा सकें।

एसएसजे विश्वविद्यालय में नशामुक्ति को लेकर जागरूकता रैली और नुक्कड़ नाटक का आयोजन

अल्मोड़ा(आरएनएस)। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय परिसर अल्मोड़ा में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में सरकार के नशामुक्ति अभियान के तहत नशामुक्ति एवं सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं और आम नागरिकों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करते हुए स्वस्थ, सुरक्षित और नशामुक्त समाज के निर्माण का संदेश देना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रवीण सिंह बिष्ट ने सामाजिक जनजागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर किया। रैली में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों, विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने लोगों को नशे से दूर रहने और सकारात्मक जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान जनजागरूकता रैली, साइकिल रैली, नुक्कड़ नाटक और शपथ ग्रहण जैसी गतिविधियां आयोजित की गईं। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से नशे के दुष्परिणामों तथा इसके कारण व्यक्ति, परिवार और समाज पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया।

कंप्यूटर विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. पारुल सक्सेना ने विद्यार्थियों और स्वयंसेवकों को नशामुक्ति की शपथ दिलाई। सभी ने स्वयं नशे से दूर रहने और समाज में नशे के प्रति जागरूकता फैलाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. रविन्द्र पाठक और समन्वयक डॉ. डीएस धामी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न छात्रसंघों के प्रतिनिधियों ने भी युवाओं से नशे से दूर रहने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने की अपील की। अल्मोड़ा नगर निगम के पार्षद अमित साह मोनू और कृष्ण बहादुर थापा ने युवाओं की भागीदारी को नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम में अंकिता रावत, मानसी, दिव्या बिष्ट, दिव्या टम्टा, प्रियांशु डसीला, राहुल जोशी, नवीन धामी, निकिता त्रिकोटी तथा वरिष्ठ स्वयंसेवी हिमांशु जोशी सहित अन्य स्वयंसेवियों ने सक्रिय सहभागिता की। कार्यक्रम का समापन नशामुक्ति का संदेश देते हुए हुआ। आयोजन के माध्यम से विद्यार्थियों और स्थानीय नागरिकों को नशे के विरुद्ध जागरूक रहने तथा समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया गया।



प्री-बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी में जुटे देहरादून के विद्यार्थी, पढ़ाई के लिए बना रहे विशेष रणनीति

नगर संवाददाता

देहरादून। शहर के विभिन्न विद्यालयों में प्री-बोर्ड परीक्षाओं का समय नजदीक आने के साथ ही कक्षा 10वीं एवं 12वीं के विद्यार्थियों ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। विद्यार्थी परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए नियमित अध्ययन, विषयवार समय प्रबंधन, पाठ्यक्रम पूरा करने और पुराने प्रश्नपत्रों के अभ्यास पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। इसी क्रम में द टोंस ब्रिज स्कूल (रेजिडेंशियल एवं डे स्कूल) के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों ने अपनी परीक्षा तैयारी की रणनीति साझा की।

विद्यालय के छात्र नील ने बताया कि वह प्रतिदिन लगभग 6 घंटे पढ़ाई के लिए निर्धारित करते हैं। इसमें 2 घंटे गणित, 2 घंटे विज्ञान, 1 घंटा सामाजिक विज्ञान तथा आधा-आधा घंटा हिंदी और अंग्रेजी को देते हैं। उनका कहना है कि वह निधर्रित समय में पाठ्यक्रम पूरा करने के साथ-साथ नियमित रूप से उसका रिवीजन भी कर रहे हैं, ताकि परीक्षा के समय किसी भी विषय में परेशानी न हो।

वहीं छात्रा श्रेयांकी शर्मा ने बताया कि वह सुबह 4 बजे उठकर अपनी पढ़ाई शुरू करती हैं और सबसे पहले 2 घंटे गणित का अभ्यास करती हैं। स्कूल से लौटने के बाद सामाजिक विज्ञान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (।ए) को 1-1 घंटे देती हैं, जिसके बाद ट्यूशन जाती हैं। ट्यूशन से लौटने के बाद आधा घंटा अंग्रेजी, फिर 15 मिनट का ब्रेक, आधा घंटा हिंदी और मानसिक ताजगी के लिए आधा घंटा पैदल चलने का समय निर्धारित किया है। इसके बाद वह 2 घंटे रिवीजन करती हैं। उन्होंने बताया कि नियमित दिनचर्या और समय प्रबंधन से पढ़ाई में निरंतरता बनाए रखने में मदद मिलती है।

विद्यार्थियों के गणित शिक्षक हरिसिमरन सिंह ने सभी बोर्ड परीक्षार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि परीक्षा में सफलता के लिए केवल लंबे समय तक पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सही रणनीति, नियमित अभ्यास और समय पर रिवीजन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को पिछले वर्षों के ब्लैम् प्रश्नपत्रों का अधिक से अधिक अभ्यास करना चाहिए, अपनी गलतियों का विश्लेषण करना चाहिए तथा कठिन विषयों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को आत्मविश्वास बनाए रखने, अनुशासित दिनचर्या अपनाने और बिना तनाव के मेहनत करने की सलाह दी। इस अवसर पर मयंक बंकोटी, रुद्र प्रताप सिंह, नील टोंक, पार्थेंद्र गढ़िया, अक्षत गुप्ता, दिविज आनंद, सायना के. वाधवा एवं श्रेयांकी शर्मा उपस्थित रहे। शिक्षकों का मानना है कि नियमित मेहनत, उचित समय प्रबंधन और निरंतर अभ्यास के माध्यम से विद्यार्थी प्री-बोर्ड के साथ-साथ आगामी बोर्ड परीक्षाओं में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

स्मैक के साथ गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। पुलिस ने स्मैक के साथ एक को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार नेहरू कालोनी थाना पुलिस ने सपेरा बस्ती पुल के पास एक युवक को संदिग्ध अवस्था में घुमते हुए देखा तो उसको रूकने का इशारा किया। पुलिस को देख वह भाग खडा हुआ। पुलिस ने पीछा कर उसको थोडी दूरी पर ही दबोच लिया। तलाशी लेने पर पुलिस ने उस के कब्जे से 13.०4 ग्राम स्मैक बरामद कर ली। पूछताछ में उसने अपना नाम विशालनाथ उर्फ सिददू पुत्र विव्रक्तम नाथ निवासी सपेरा बस्ती मौथरोवाला बताया। पुलिस ने उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

फूड डिलीवरी की आड़ में खाद्य सुरक्षा... ◀◀ पृष्ठ 1 का शेष

सबसे जरूरी यह है कि प्रशासन केवल शिकायत मिलने का इंतजार न करे। शहर में संचालित क्लाउड किचन और आनलाइन फूड प्रतिष्ठानों का सर्वे कराया जाए। उनके वास्तविक संचालन स्थल, लाइसेंस, पंजीकरण और खाद्य सुरक्षा मानकों की पड़ताल हो। नियम तोड़ने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाए और उपभोक्ताओं को भी शिकायत दर्ज कराने का प्रभावी माध्यम उपलब्ध कराया जाए। सवाल सीधा है कि जब देहरादून की गलियों में मोबाइल एप के जरिए खाना घर-घर पहुंच रहा है तो क्या प्रशासन को यह पता है कि उन घरों तक पहुंचने वाला खाना किन रसोइयों में, किन परिस्थितियों में और किसकी निगरानी में तैयार हो रहा है? डिजिटल कारोबार की चमक के पीछे यदि खाद्य सुरक्षा के नियम कमजोर पड़ रहे हैं तो यह केवल कारोबार का मामला नहीं, बल्कि लाखों लोगों की सेहत से जुड़ा सवाल है। सुविधा के नाम पर चल रहे इस कारोबार में पारदर्शिता और जवाबदेही तय करना अब जरूरी हो गया है।

गौ संरक्षण का सीधा संबंध ग्रामीण अर्थव्यवस्था, प्राकृतिक खेती और किसानों की समृद्धि से:सीएम



नगर संवाददाता

मथुरा/ देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को उत्तर प्रदेश के मथुरा जनपद के फरह स्थित गऊ-ग्राम, परखम में दीनदयाल गौ विज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र में दीनदयाल कामधेनु गौशाला समिति के विभिन्न प्रकल्पों के लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।

इस अवसर पर पशु आयुर्वेद एवं पारंपरिक ज्ञान में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम का शुभारंभ, आयुर्वेद एवं पंचगव्य अनुसंधान केन्द्र तथा श्री नंदीश्वर छात्रावास का लोकार्पण किया गया। साथ ही आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, पशु चिकित्सा महाविद्यालय तथा आवासीय परिसर का शिलान्यास किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मथुरा भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना का प्रमुख केंद्र है। भगवान श्रीकृष्ण ने इस पावन भूमि से संपूर्ण मानवता को धर्म, कर्म और कर्तव्य का संदेश दिया। भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के अनेक प्रसंग गौमाता के प्रति उनके प्रेम और सम्मान को दर्शाते हैं। गौ संरक्षण केवल धार्मिक आस्था से जुड़ा विषय नहीं है, बल्कि इसका सीधा संबंध हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था, प्राकृतिक खेती और किसानों की समृद्धि से भी है। दीनदयाल कामधेनु गौशाला समिति इस विचार को धरातल पर उतारने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।मुख्यमंत्री ने कहा कि समिति द्वारा गौ सेवा को गोवंश संरक्षण तक सीमित न रखकर आधुनिक शिक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान, चिकित्सा एवं प्रशिक्षण से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। आज गौ सेवा के क्षेत्र में ऐसी सोच की आवश्यकता है, जिसमें हमारी प्राचीन परंपराएं और आधुनिक विज्ञान एक-दूसरे के पूरक बनें। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज जिन प्रकल्पों का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया गया है, वे भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित किए जा रहे हैं। ये प्रकल्प आने वाले समय में पशु चिकित्सा, अनुसंधान और गौ संरक्षण के क्षेत्र में नई संभावनाएं विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। यहां से प्रशिक्षित होने वाले विद्यार्थी और शोधार्थी नए विचारों को आगे बढ़ाने के साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा को भी मजबूती प्रदान करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मां यमुना की पवित्र धारा देवभूमि उत्तराखण्ड और ब्रजभूमि को जोड़ती है। उत्तराखण्ड के यमुनोत्री धाम से निकलने वाली मां यमुना अनेक क्षेत्रों को जीवन प्रदान करते हुए ब्रजभूमि को सिंचित करती हैं। उत्तराखण्ड के हरिपुर-कालसी का भी ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व रहा है। मान्यता है कि प्राचीन समय में यमुनोत्री धाम जाने वाले श्रद्धालु हरिपुर-कालसी में मां यमुना में स्नान करने के बाद अपनी यात्रा प्रारंभ करते थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरिपुर-कालसी की प्राचीन धार्मिक पहचान को पुनर्स्थापित करने के उद्देश्य से वहां मां यमुना के भव्य घाट का निर्माण कराया गया है, जिसका हाल ही में लोकार्पण किया गया है। वहां मां यमुना की भव्य प्रतिमा भी स्थापित की गई है। राज्य सरकार का प्रयास है कि हरिपुर-कालसी को मां यमुना के प्रमुख धार्मिक एवं आध्यात्मिक केंद्र के रूप में विकसित किया जाए। मुख्यमंत्री ने संत समाज एवं श्रद्धालुओं को हरिपुर-कालसी आने और मां यमुना की आरती में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण केवल उनके गौरव का उल्लेख करने से नहीं, बल्कि ठोस कार्यों और प्रयासों से संभव है। नदियों के संरक्षण, गोवंश के संरक्षण एवं संवर्धन तथा अनुसंधान को नई दिशा देने के प्रयास हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि दीनदयाल कामधेनु गौशाला समिति द्वारा किए जा रहे कार्य उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश सहित पूरे देश के लिए अनुकरणीय हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में सभी को अपना योगदान देना होगा। उन्होंने समिति के पदाधिकारियों, गौ सेवकों एवं सहयोगियों को विभिन्न प्रकल्पों के लोकार्पण एवं शिलान्यास की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, निरंजन पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी कैलाशानन्द गिरि महाराज, श्री पंच दशनाम जूना अखाड़े के आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि महाराज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री सुरेश सोनी सहित दीनदयाल कामधेनु गौशाला समिति के पदाधिकारी एवं गणमान्य लोग उपस्थित थे

आराकोट-बंगाण में करोड़ों खर्च, सात साल बाद भी सड़कें बदहाल

हमारे संवाददाता

उत्तरकाशी। आराकोट-बंगाण की 2019 की आपदा को सात साल बीत गए, लेकिन आपदा के बाद हुए पुनर्निर्माण का हिसाब अब भी सवालों के घेरे में है। उपलब्ध सरकारी रिकॉर्ड और दस्तावेज बताते हैं कि सड़क, पुल और बाढ़ सुरक्षा के नाम पर विभिन्न विभागों ने बड़े पैमाने पर काम कराए। मगर 2024 में इन्हीं कार्यों की गुणवत्ता और ठेकेदार आवंटन को लेकर शिकायत सामने आने के बाद पांच सदस्यीय जांच समिति बनानी पड़ी। सवाल यह है कि जांच में क्या निकला और कार्रवाई कहां तक पहुंची?

2024 की शिकायत में लोनिवि, सिंचाई विभाग और टौंस वन प्रभाग के करोड़ों रुपये के अलग-अलग कार्य एक ही ठेकेदार को दिए जाने का आरोप लगाया गया था। जांच के दायरे में मोल्डी-आराकोट, टिकोची, चिंवा-मौंडा, टिकोची-जागटा, टिकोची पुल, जागटा पुल तथा कई बाढ़ सुरक्षा कार्य शामिल थे। प्रशासन ने जांच समिति तो बना दी, लेकिन अंतिम जांच रिपोर्ट और उसके आधार पर हुई कार्रवाई का स्पष्ट

◆पुनर्निर्माण की गुणवत्ता पर सवाल!

सार्वजनिक रिकॉर्ड अब तक सामने नहीं आया। सरकारी रिकॉर्ड में आराकोट-चिंवा मार्ग की लंबाई 13.55 किमी दर्ज है। 2026 की रिपोर्ट में विभागीय जानकारी के आधार पर सड़क पर करीब 6.51 करोड़ रुपये खर्च और पांच साल के रखरखाव के लिए 69.09 लाख रुपये की व्यवस्था बताई गई। लेकिन 2026 में इसी मार्ग पर बार-बार भूस्खलन हुआ। 28 सितंबर को किमी 6, 12, 13 और 14 प्रभावित हुए और सरकारी रिकॉर्ड में 31 लाख रुपये की पुनर्स्थापना लागत दर्ज हुई। सवाल करोड़ों के निर्माण में आपदा-रोधी डिजाइन, जल निकासी और पहाड़ी सुरक्षा का कितना ध्यान रखा गया था?

टिकोची-दुचाणु-किराणु-सिरतोली क्षेत्र में भी 2026 में सड़क बाधित होने की घटनाएं दर्ज हैं। इसके बीच 2025 में इसी कॉरिडोर में लगभग 42 करोड़ रुपये के सड़क और पुल संबंधी कार्य शुरू हुए। आराकोट के निकट पावर नदी पर 80 मीटर लंबा इसाली सस्पेंशन ब्रिज सरकारी सूची में 1989 निर्मित दर्ज है। 2019 की आपदा के बाद इस पुल पर कितना खर्च हुआ, क्या संरचनात्मक मरम्मत हुई और किस योजना के तहत हुईख़इन सवालों का स्पष्ट जवाब सार्वजनिक रिकॉर्ड में नहीं मिलता।

बदरीनाथ धाम में भूमिगत होंगी विद्युत लाइनें

चमोली(आरएनएस)। बदरीनाथ धाम में मास्टर प्लान के तहत 11 केवी और एलटी विद्युत लाइनों को भूमिगत किया जाएगा। इसके लिए प्रभावित होने वाली विभिन्न विभागों की परिसंपत्तियों के पुनर्निर्माण की तैयारी तेज कर दी गई है। जिलाधिकारी गौरव कुमार ने संबंधित विभागों को परिसंपत्तियों का आकलन कर जल्द प्रस्ताव उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। शुक्रवार को जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में विद्युत लाइनों को भूमिगत करने से जुड़े कार्यों की समीक्षा की गई। योजना के तहत 11 केवी विद्युत नेटवर्क पर रिंग सिस्टम विकसित करने के साथ निर्बाध आपूर्ति के लिए एलटी फीडर पैनल स्थापित किए जाएंगे। वहीं, दो कॉम्पैक्ट सब स्टेशन का निर्माण पहले ही पूरा हो चुका है। डीएम ने कहा कि प्रस्तावित कार्यों के दौरान खुदाई से विभिन्न विभागों की परिसंपत्तियां प्रभावित हो सकती हैं। ऐसे में सभी विभाग समय रहते नुकसान का आकलन कर पुनर्निर्माण के प्रस्ताव दें, ताकि बजट की व्यवस्था कर कार्यों को बिना बाधा पूरा किया जा सके। उन्होंने मास्टर प्लान के अन्य कार्यों में भी तेजी लाने और नियमित निगरानी के निर्देश दिए। कहा कि आगामी यात्रा सीजन शुरू होने से पहले सभी आवश्यक कार्य पूरे किए जाएं, जिससे श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिल सकें। इस मौके पर एडीएम नारायण सिंह नबियाल, नपं बदरीनाथ के अधिशासी अधिकारी सुनील पुरोहित, जिला पर्यटन विकास अधिकारी अरविंद गौड़, ऊर्जा निगम के अधीक्षण अभियंता अनिल वर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

अज्ञात वाहन की चपेट में आकर मोटरसाईकिल सवार की मौत

संवाददाता

देहरादून। अज्ञात वाहन की चपेट में आकर मोटरसाईकिल सवार की मौत हो गयी। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार नई मण्डी मुजफ्फरनगर निवासी अनिल ने डोईवाला कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसका बेटा अभिषेक अपनी मोटरसाईकिल से लालतप्पड की ओर जा रहा था जब वह लालतप्पड के पास पहुंचा तभी अज्ञात वाहन ने उसको अपनी चपेट में ले लिया। जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। आसपास के लोगों ने उसको अस्पताल में भर्ती कराया जहां पर उपचार के दौरान उसकी मौत हो गयी। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

चमोली में आंगनबाड़ी सह क्रेच केंद्रों के लिए 36 पदों पर भर्ती

चमोली(आरएनएस)। जिले के नौ विकासखंडों में संचालित 18 आंगनबाड़ी सह क्रेच केंद्रों के लिए महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास विभाग ने 36 पदों पर भर्ती निकाली है। इनमें क्रेच वर्कर के 18 और क्रेच हेल्पर के 18 पद शामिल हैं। इच्छुक अभ्यर्थी 17 दिसंबर तक संबंधित बाल विकास परियोजना कार्यालय में केवल पंजीकृत डाक से आवेदन भेज सकते हैं। कर्णप्रयाग, दशोली, नारायणबगड़, पोखरी, नंदानगर, ज्योतिर्मठ, गैरसैंण, थराली और देवाल ब्लॉक के दो-दो केंद्रों में भर्ती की जाएगी। इनमें पीलसेरा और प्रेम बहुगुणा नगर, सुभाषनगर-2 और विवेकानंद कॉलोनी, नारायणबगड़ और मैदुनी, जिलासू और पोखरी-2, कुरुड़ और कुन्तरी फाली, नागचोडारी और डाडों, गैर-2 और धारगट, कुलसारी और राड़ीबगड़ तथा सैलखोला और देवाल शामिल हैं। क्रेच वर्कर के लिए इंटरमीडिएट और हेल्पर के लिए हाईस्कूल उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। अभ्यर्थियों की आयु 18 से 35 वर्ष के बीच होनी चाहिए। चयन शैक्षिक योग्यता की मेरिट के आधार पर होगा। चयनित क्रेच वर्कर को 5500 रुपये और हेल्पर को 3000 रुपये प्रतिमाह मानदेय दिया जाएगा। आवेदन के साथ चरित्र प्रमाण पत्र, पुलिस सत्यापन और चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य है। जिला कार्यक्रम अधिकारी हिमांशु बडोला ने बताया कि आवेदन पत्र संबंधित बाल विकास परियोजना कार्यालय और जिला कार्यक्रम कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं।

शराब के साथ दो महिलाओं सहित तीन गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। पुलिस ने शराब के साथ दो महिलाओं सहित तीन लोगों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ऋषिकेश कोतवाली पुलिस ने पुराने रेलवे स्टेशन शौचालय के पास दो महिलाओं को संदिग्ध अवस्था में घुमते हुए देखा तो उनको रूकने का इशारा किया। पुलिस को देख वह भाग खडी हुई। पुलिस ने पीछा कर उनको थोडी दूरी पर ही पकड लिया। तलाशी लेने पर पुलिस ने उनके कब्जे से 70 पव्वे शराब के बरामद कर लिये। पूछताछ में उन्होंने अपने नाम गीता देवी पत्नी राम प्रसाद व रेनू देवी पत्नी अरूण साहनी निवासी झुग्गी बस्ती मायाकुंड बताया। इसके साथ ही नेहरू कालोनी थाना पुलिस ने दून यूनिवर्सिटी से आगे खाली प्लाट से एक को 53 पव्वे शराब के साथ गिरफ्तार किया। जिसने अपना नाम शुभम पुत्र राजवीर निवासी दीपनगर बताया। पुलिस ने तीनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

गढ़वाली फिल्म 'ढोली' का विधिवत शुभारम्भ

संवाददाता

देहरादून। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित पहली गढ़वाली फिल्म 'ढोली' का पहला शो मॉल में विधिवत शुभारम्भ किया गया।



आज यहां उत्तराखंड की राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित पहली गढ़वाली फिल्म 'ढोली' का पहला शो सेंट्रियो मॉल, देहरादून में इसका विधिवत शुभारम्भ किया गया। इसके साथ ही 'ढोली' आज देश के प्रमुख सिनेमाघरों में प्रदर्शित हुई। यह दिन गढ़वाली सिनेमा के इतिहास में एक गौरवपूर्ण दिन बन गया। इस अवसर पर फिल्म विकास परिषद के नोडल अधिकारी के.एस. चौहान ने कहा कि पहाड़ में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए इस प्रकार की फिल्में बनती रहनी चाहिए। फिल्म में मैसेज बहुत बड़ा है जो कि काफी स्पष्टता के साथ दर्शकों तक पहुंचता है। इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला इससे उत्तराखण्ड का सम्मान बढ़ा है। उन्होने कहा कि ढोल हमारी सांस्कृतिक पहचान है। यह वाद्ययंत्र हमारी संस्कृति का केन्द्र बिंदु है। लेकिन हमारे समाज ने इसकी उपेक्षा की है। इस कला को संरक्षण मिलना चाहिए और ढोल वादकों को उचित पारिश्रमिक और समाज में उचित सम्मान दिया जाना चाहिए। गढ़वाल सभा प्रवक्ता और संस्कृतिकर्मी अजय जोशी ने कहा कि ढोली फिल्म का विषय समरसता को बनाया गया है जो कि बहुत ही सामयिक है। फिल्म से समाज में समरसता का भाव प्रगाढ़ होगा। इसकी आज हमारे समाज और देश को बहुत जरूरत है। यह फिल्म न सिर्फ उत्तराखण्डियों को बल्कि इसे पूरे देश के लोगों को देखनी चाहिए। उन्होने बताया कि फिल्म को देखकर वे भावुक हो गये थे। इस अवसर पर गढ़वाल सभा अध्यक्ष रोशन धस्माना ने कहा कि फिल्म की पटकथा सशक्त और निर्देशन उत्कृष्ट है। साहित्यकार मदन डुकलान ने कहा कि ढोली फिल्म ने राष्ट्रीय पुरस्कार जीतकर उत्तराखंडी सिनेमा के लिए बेहतर मार्ग बनाया है।

गढ़वाली फिल्मों के निर्देशक कांता प्रसाद ने फिल्म में कलाकारों की अभिनय की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह बेहद अच्छा प्रयास है। फिल्म बेहद शानदार और प्रभावशाली है। फिल्म की कहानी, निर्देशन और सभी कलाकारों का अभिनय सराहनीय है। उन्होने उत्तराखण्ड फिल्म जगत के अपने सभी सम्मानित साथियों से आग्रह किया कि इस बेहतरीन फिल्म को देखने के लिए सिनेमाघरों तक अवश्य पहुंचें।

ज्ञातब्य है कि गढ़वाली भाषा की फिल्म ढोली को प्रतिष्ठित 72वां नेशनल एवार्ड मिला है। गढ़वाली सिनेमा के 43 वर्षों के इतिहास में पहली बार किसी फीचर फिल्म को यह एवार्ड प्राप्त हुआ। इस फिल्म के निर्माता सुनील नायक और निर्देशन हिंदी और मराठी फिल्मों के जाने-माने निर्देशक दिनेश पी भोसले ने किया है। संगीत गढ़रत्न नरेन्द्र सिंह नेगी दिया है तथा इसकी कहानी और गीत डॉ. नंद किशोर हटवाल ने लिखे हैं। इस अवसर पर गढ़वाल सभा महासचिव गजेंद्र भंडारी, वीरेंद्र असवाल, फिल्म निर्देशक प्रदीप भंडारी, गोकुल पंवार, आशु चौहान, जे.एस. थापा, राजेश जोशी, ब्रिज रावत, संजय चमोली, वरिष्ठ रंगकर्मी अवि नंदा, उदित पांडे, पण्डित सुशान्त राज, लक्की सिंह, कृपा राम नौटियाल, साहित उत्तराखण्ड फिल्म उद्योग के कई सम्मानित निर्माता, निर्देशक और कलाकार साथियों के साथ शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने फिल्म को देखा तथा इसकी प्रशंसा की। इस मौके पर फिल्म ढोली के गीतकार एवं कहानी लेखक डॉ नंद किशोर हटवाल, अभिनेता एवं आर्ट डारेक्टर अतुल विश्नोई, अभिनेता रमेश नौड़ियाल, सतीश धौलाखंडी, गायत्री टम्टा, सोनिया गैरोला, ऋषभ, तन्मय, पंकज डंगवाल, अतुल रावत उपस्थित रहे। टीम ढोली के सभी सदस्यों ने दर्शकों से प्राप्त सकारात्मक प्रतिक्रिया पर खुशी व्यक्त की तथा सभी आमंत्रित अतिथियों, मीडिया प्रतिनिधियों एवं कला-संस्कृति से जुड़े लोगों से कार्यक्रम में उपस्थित होकर आयोजन की गरिमा बढ़ाने तथा फिल्म के प्रचार-प्रसार में सहयोग देने की अपील की है।

30 नवंबर से ठेकेदारों की अनिश्चितकालीन धरना-प्रदर्शन की घोषणा

संवाददाता

देहरादून। जल जीवन मिशन के अंतर्गत प्रदेश में पेयजल योजनाओं का कार्य करने वाले ठेकेदारों का भुगतान न होने पर ठेकेदारों ने 30 नवम्बर को अनिश्चिकाली धरना प्रदर्शन व सचिवालय घेराव का निर्णय लिया।



आज यहां जल जीवन मिशन के अंतर्गत उत्तराखंड प्रदेश में पेयजल योजनाओं का कार्य करने वाले ठेकेदारों का लंबे समय से भुगतान लंबित होने के कारण ठेकेदारों को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में देवभूमि जल शक्ति कांट्रेक्टर वेलफेयर एसोसिएशन देहरादून द्वारा पूर्व में भी सचिव, पेयजल निगम एवं विभागीय अधिकारियों को कई बार पत्राचार के माध्यम से अपनी समस्याओं से अवगत कराया गया है, लेकिन आज तक लंबित भुगतानों के संबंध में कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। उल्लेखनीय है कि 17 अगस्त 2026 को सचिव के साथ हुई अंतिम बैठक में भी एसोसिएशन द्वारा अपनी समस्याओं को प्रमुखता से उठाया गया था। बैठक के उपरांत आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह स्पष्ट किया गया था कि मुख्यमंत्री को तीन दिन का समय दिया गया है, ताकि एसोसिएशन के प्रतिनिधि मंडल को वार्ता के लिए बुलाकर ठेकेदारों के लंबित भुगतान के संबंध में विभाग को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए जा सकें। साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया गया था कि यदि सकारात्मक कार्रवाई नहीं होती है तो दिनांक 30 नवंबर 2026 से प्रदेशभर के ठेकेदार आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। दुर्भाग्यपूर्ण है कि बार-बार आश्वासन मिलने के बावजूद आज तक भुगतान की कोई निश्चित तिथि घोषित नहीं की गई है। पूर्व में मुख्य सचिव के निर्देश पर धरना समाप्त कराते समय 10 दिनों के भीतर भुगतान किए जाने का आश्वासन दिया गया था, लेकिन निर्धारित समय बीत जाने के बाद भी ठेकेदारों को उनका भुगतान प्राप्त नहीं हुआ है। इसी के विरोध में प्रदेश के समस्त ठेकेदार भाइयों द्वारा 30 नवंबर 2026 को देहरादून स्थित कार्यालय में एकत्रित होकर सचिवालय कूच किया जाएगा तथा अपनी मांगों के समर्थन में अनिश्चितकालीन धरना-प्रदर्शन प्रारंभ किया जाएगा। यह धरना तब तक जारी रहेगा, जब तक सरकार द्वारा हमारी मांगों पर सकारात्मक निर्णय लेते हुए लंबित भुगतान की निश्चित तिथि घोषित नहीं की जाती। एसोसिएशन का कहना है कि मुख्यमंत्री द्वारा अपने कार्यकाल की उपलब्धियों के रिपोर्ट कार्ड में जल जीवन मिशन के अंतर्गत 14.20 लाख ग्रामीण परिवारों को नल के माध्यम से शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने की उपलब्धि का उल्लेख किया गया है। यह निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, लेकिन यह भी विचारणीय है कि इस उपलब्धि को धरातल पर उतारने वाले ठेकेदारों का भुगतान आज तक क्यों नहीं किया गया? जिन ठेकेदारों ने अपने संसाधन और निजी पूंजी लगाकर योजनाओं को पूरा किया, वे आज अपने ही धन के लिए संघर्ष करने को मजबूर हैं। सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए कि इन योजनाओं को पूरा करने वाले ठेकेदारों का बकाया भुगतान आखिर कब तक किया जाएगा। जल जीवन मिशन के अंतर्गत पेयजल योजनाओं के सभी लंबित भुगतानों का शीघ्र अति शीघ्र भुगतान कराया जाए। मुख्यमंत्री स्वयं इस प्रकरण का संज्ञान लेते हुए ठेकेदार एसोसिएशन के प्रतिनिधिमंडल को वार्ता के लिए आमंत्रित करें।



अरोडा वंश बिरादरी का 22वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन 20 दिसम्बर को

संवाददाता

देहरादून। हजारा अरोडा वंश बिरादरी 22वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन 20 दिसम्बर को किया जायेगा।

आज यहां हजारा अरोडा वंश बिरादरी वैलफेयर सोसायटी के सचिव श्याम सुन्दर अरोडा ने जानकारी देते हुए बताया कि सोसायटी कई वर्षो से वैवाहिक परिचय सम्मेलन कराती आ रही है। इस वर्ष भी संस्था द्वारा आयोजित किया जाने वाला 22वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन 20 दिसम्बर रविवार को गुरू रोड स्थित वैडिंग प्वांइट में आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सम्मेलन में भाग लेने हेतु व्यस्क प्रत्याशी को अपने अभिभावक के साथ आना आवश्यक है। फार्म का मूल्य 700 रूपये रखा गया है तथा फार्म सीमित संख्या में हैं। एक फार्म पर तीन व्यक्तियों हेतु भोजन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की गयी है। सम्मेलन में देहरादून से बाहर के भी प्रत्याशियों के आने की सम्भावना है। जैसे हरिद्वार, विकासनगर, ऋषिकेश, रूडकी, दिल्ली, उत्तरकाशी, हल्द्वानी, श्रीनगर आदि से आ सकते हैं। फार्म वितरण हेतु 21 स्थानों का चयन किया गया है जहां से फार्म प्राप्त किये जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि फार्म की संख्या सीमित होने तथा मांग अधिक होने के कारण सभी इच्छुक लोगों से अपील है कि अपना फार्म शीघ्र प्राप्त कर भरकर जमा कर दें ताकि इस अवसर पर दी जाने वाली स्मारिका में भी प्रविष्टि हो सके। इस अवसर पर प्रधान सुरेन्द्र अरोडा, उप प्रधान श्रीमती वीना मुगलानी, सचिव श्याम सुन्दर अरोडा, सविन्दर पाल, राजेश अरोडा, बाबू राम सहगल, श्रीमती सुषमा अरोडा आदि उपस्थित रहे।

दून हास्पिटल पार्किंग से स्कूटी चोरी

संवाददाता

देहरादून। चोरों ने दून हास्पिटल की पार्किंग से स्कूटी चोरी कर ली। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मेहूंवाला निवासी फुरकान सलमानी ने कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि वह किसी काम से दून हास्पिटल आया था। उसने अपनी स्कूटी पार्किंग में खडी की थी। लेकिन जब वह थोडी देर बाद वापस आया तो उसकी स्कूटी अपने स्थान से गायब थी। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

सू- दोकू क्र. 82

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.81 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

90 साल से महिला शिक्षा की अलख जगा रहा संस्थान, 'अनुभूति' में छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा

हरिद्वार(आरएनएस)। कनखल स्थित श्रीमती शकुंतला शास्त्री स्मारक महिला इंटर कॉलेज में शुक्रवार को वार्षिकोत्सव 'अनुभूति' उत्साह के साथ मनाया गया। 90 वर्षों से महिला शिक्षा के क्षेत्र में पहचान बना रहे विद्यालय की छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से अपनी प्रतिभा दिखाई। कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति, उत्तराखंड की विरासत, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक मुद्दों को मंच पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय प्रबंधक डॉ. अशोक शास्त्री, संरक्षिका डॉ. वीणा शास्त्री, एमसीएस बाल विद्यापीठ सतीकुंड की निदेशिका डॉ. विशाखा कुमार, प्रधानाचार्य रेखा पुरोहित और निर्देशिका शशि प्रभा वर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'मीमांसा' के वर्ष 2026-27 के अंक का विमोचन भी किया गया। छात्राओं ने 'सृष्टि का स्पंदन' नृत्य से कार्यक्रम की शुरुआत की। 'ग्लोरियस एंड प्रॉस्परस इंडिया' के जरिए भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों को दर्शाया।

रविंद्र संगीत पर आधारित नृत्य और डॉ. भूपेंद्र हजारिका व जुबीन गर्ग को समर्पित 'अमर सुरों का महासंगम' प्रस्तुति ने दर्शकों को भावुक किया। 'माटी की पुकार' में धरती के संरक्षण का संदेश दिया गया, जबकि 'उत्तराखंड की गूंज' के जरिए प्रदेश के इतिहास, संस्कृति और स्वाभिमान को दर्शाया गया। 'क्लासिकल बनाम भरतनाट्यम', 'योगासन' और अमीर खुसरो की सूफियाना संगीत परंपरा पर आधारित प्रस्तुति भी आकर्षण का केंद्र रही। 'पेपर लीक' नृत्य नाटिका के माध्यम से सामाजिक समस्या उठाई गई। छात्राओं ने शेक्सपियर के नाटक पर आधारित अंग्रेजी प्रस्तुति 'द मर्चेंट ऑफ वेनिस' भी पेश की। 'शान-ए-पंजाब' के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस अवसर पर महिला डिग्री कॉलेज की प्राचार्य शशि तोमर, वरिष्ठ प्रवक्ता प्रेरणा पांडे, महिला विद्यालय सेल्फ फाइनेंस विंग की निदेशक अल्पना शर्मा, प्रबंध समिति सदस्य अवनीश पांडे और भूपेंद्र गौड़, पूर्व शिक्षिकाएं रानी गौड़ व प्रेम चावला और हरिद्वार विकास समिति के अध्यक्ष रवि बाबू शर्मा सहित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी मौजूद रहे।

गौलापार में अंतरराज्यीय बस टर्मिनल की मांग हुई तेज

हल्द्वानी(आरएनएस)। गौलापार क्षेत्र में प्रस्तावित अंतरराज्यीय बस अड्डे के शीघ्र निर्माण को लेकर प्रांतीय उद्योग व्यापार मंडल ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को ज्ञापन भेजा है।

भाजपा नैनीताल जिला अध्यक्ष प्रताप बिष्ट के माध्यम से प्रेषित ज्ञापन में कहा गया कि कुमाऊं के प्रवेश द्वार हल्द्वानी के बढ़ते विस्तार से मुख्य बाजारों, चौराहों और आंतरिक मार्गों पर वाहनों का दबाव बढ़ गया है, जिससे आए दिन जाम की समस्या से नागरिकों व व्यापारियों को जूझना पड़ता है। व्यापारियों के अनुसार, गौलापार में आईएसबीटी बनने से शहर के भीतर बसों व भारी वाहनों का दबाव घटेगा, यातायात सुचारू होगा और शहर के सुनियोजित विकास को गति मिलेगी।

महानगर के साथ महिला और युवा व्यापार मंडल ने भी परियोजना को जल्द धरातल पर उतारने की मांग की। इस दौरान महानगर अध्यक्ष कैलाश जोशी, महामंत्री मधुकर बनौला, दीपक पाठक, दुर्गा बिष्ट, ललित पुजारी, चेतन कोहली, गौरव गुप्ता, कमलेश बड़ौला और डॉ. संदीप गौड़ मौजूद रहे।

बरेली के लिए निकली महिला लापता, गुमशुदगी दर्ज

हल्द्वानी(आरएनएस)। तीनपानी क्षेत्र के हैड़ागज्जर गांव निवासी सुनीता देवी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई हैं। वह 23 नवंबर को बरेली जिले के देवरनिया थाना क्षेत्र स्थित अपने पैतृक गांव अमृता इमरती जाने के लिए घर से निकली थीं, लेकिन वहां नहीं पहुंचीं।

परिजनों के अनुसार, काफी तलाश के बाद भी उनका कोई सुराग नहीं लग सका। इसके बाद उनके पुत्र दिनेश कुमार ने हल्द्वानी कोतवाली में गुमशुदगी की तहरीर दी, जिस पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा के लिए हरिद्वार में 52 केंद्र बनाए

हरिद्वार(आरएनएस)। उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारंभिक परीक्षा-2026 को नकलविहीन और निष्पक्ष संपन्न कराने के लिए जिला प्रशासन ने तैयारियां पूरी करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्ट्रेट सभागार में अपर जिलाधिकारी वैभव गुप्ता ने सेक्टर मजिस्ट्रेटों और संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर व्यवस्थाओं की समीक्षा की। जनपद में परीक्षा के लिए 52 केंद्र बनाए गए हैं। इनमें रुड़की क्षेत्र के 16 और हरिद्वार क्षेत्र के 36 केंद्र शामिल हैं। कुल 20,958 परीक्षार्थी दो पालियों में परीक्षा देंगे। पहली पाली सुबह 10 से दोपहर 12 बजे और दूसरी पाली दोपहर दो से शाम चार बजे तक होगी। प्रत्येक केंद्र पर दो सेक्टर मजिस्ट्रेट, एक केंद्र प्रभारी और पांच पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे। मोबाइल, स्मार्ट वॉच और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण प्रतिबंधित रहेंगे। सभी केंद्रों पर जैमर लगाए जाएंगे। केंद्रों के 200 मीटर दायरे में धारा 163 लागू रहेगी। आयोग के सेक्शन अधिकारी यूनुस ने बताया कि परीक्षार्थियों को परीक्षा शुरू होने से डेढ़ घंटे पहले केंद्र पहुंचना होगा।

गन्ना मूल्य घोषित करने की मांग को लेकर तहसील में गरजे किसान

ऋषिकेश(आरएनएस)। गन्ना मूल्य घोषित नहीं होने सहित अन्य समस्याओं के समाधान नहीं होने से किसान परेशान हैं। इन्हीं मांगों को लेकर भारतीय किसान यूनियन टिकैत के बैनर तले किसानों ने रात भर डोईवाला तहसील परिसर में धरना दिया। चेताया कि यदि एक सप्ताह में गन्ने का मूल्य घोषित नहीं हुआ तो चीनी मिल गेट पर आमरण अनशन करेंगे।

डोईवाला तहसील परिसर में धरने पर बैठे किसानों ने विरम सिंह और वन विभाग के एसडीओ उदयनंद गौड़ को ज्ञापन सौंपकर समस्याओं के समाधान की मांग की। भाकियू टिकैत के जिलाध्यक्ष सुरेंद्र सिंह खालसा ने कहा कि किसान लगातार बढ़ती लागत और जंगली जानवरों से फसलों को हो रहे नुकसान से परेशान हैं। सरकार किसानों की समस्याओं पर गंभीरता नहीं दिखा रही है।

उन्होंने चेतावनी दी कि यदि शासन ने एक सप्ताह के भीतर गन्ने का मूल्य घोषित नहीं किया तो किसान शुगर मिल गेट पर आमरण अनशन शुरू करेंगे। गन्ना समिति के उपाध्यक्ष हरभजन सिंह ने कहा कि जंगली जानवर चारों तरफ किसानों की मेहनत की कमाई पर पानी फेर रहे हैं, लेकिन अधिकारी समस्या के स्थायी समाधान के लिए ठोस कदम नहीं उठा रहे हैं। किसान अपनी फसल बचाने के लिए लगातार संघर्ष कर रहे हैं। धरने को समर्थन देने पहुंचे कांग्रेस जिलाध्यक्ष मोहित उनियाल ने कहा कि किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल रहा है। सरकार को किसानों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए गन्ने का मूल्य जल्द घोषित करना चाहिए। कांग्रेस किसानों की जायज मांगों के समर्थन में उनके साथ खड़ी है। कांग्रेस प्रदेश महासचिव अश्वनी बहुगुणा ने कहा कि खाद-बीज की किल्लत और जंगली जानवरों से फसलों को हो रहे नुकसान ने किसानों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। सरकार को किसानों को राहत देने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। उन्होंने गन्ने का मूल्य 700 रुपये प्रति क्विंटल घोषित करने, खाद-बीज की उपलब्धता में राहत देने और जंगली जानवरों से फसलों की सुरक्षा आदि की मांग की। वन विभाग के एसडीओ उदयनंद गौड़ ने कहा कि जंगली जानवरों से फसलों की सुरक्षा के लिए विभाग पूरी तरह अलर्ट मोड पर है। विद्युत फेंसिंग, खाई खोदने और बायो फेंसिंग लगाने का कार्य भी जगह-जगह किया जा रहा है, ताकि किसानों की फसलों को नुकसान से बचाया जा सके। मौके पर संयुक्त किसान मोर्चे के अध्यक्ष ताजेन्द्र सिंह,विजय शास्त्री,अनूप कुमार, मोहन सिंह, परविंदर सिंह, श्याम सिंह प्रताप सिंह मड़ंजीत सिंह अमरजीत सिंह बलविंदर सिंह, स्वतंत्र बिष्ट, करतार सिंह, राहुल सैनी, उमेद बोरा आदि पदाधिकारी व किसान मौजूद रहे।

राज्य आंदोलनकारी शंकर चंद्र रमोला का निधन

संवाददाता

देहरादून। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष राज्य आंदोलनकारी शंकर चंद्र रमोला का निधन हो गया। आज यहां अत्यंत दु:खद और पीड़ादायक समाचार है। अग्रणी राज्य आंदोलनकारी, उत्तराखंड कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष शंकर चंद्र रमोला का आकस्मिक हो गया है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और उनके शोक संतप्त परिवार, समर्थकों व शुभचिंतकों को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें। उनकी अंतिम यात्रा कल, 29 नवंबर 2026 का सुबह 10:00 बजे उनके पैतृक निवास, भाऊवाला (भगवानपुर गांव) से सारना नदी भगवानपुर घाट के लिए अंतिम यात्रा प्रस्थान करेगी।

चुनावी इतिहास में 'सत्ता' की अदला...

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

अपेक्षित स्थान नहीं बना पाया। आज भी गैरसैंण राजधानी, मूल निवास, सशक्त भू-कानून, पलायन, रोजगार, जल-जंगल-जमीन और पहाड़ के संसाधनों पर स्थानीय अधिकार जैसे मुद्दे प्रदेश की राजनीति में प्रासंगिक हैं। यूकेडी इन्हीं सवालों को क्षेत्रीय एकता का आधार बनाना चाहता है। पार्टी की रणनीति है कि इन मुद्दों पर सहमति रखने वाले छोटे दलों और संगठनों को साथ लाकर एक साझा राजनीतिक एजेंडा तैयार किया जाए। क्षेत्रीय मंच की इस पहल में भाजपा और कांग्रेस के उन नेताओं को भी संभावित सहयोगी के रूप में देखा जा रहा है, जो स्थानीय मुद्दों पर सक्रिय हैं लेकिन अपने दलों में राजनीतिक अवसरों को लेकर असंतुष्ट हैं। निर्दलीय प्रत्याशियों को साथ लाने की कोशिश भी इसी रणनीति का हिस्सा है। हालांकि, ऐसे नेताओं को एक मंच पर लाना और उन्हें साझा नेतृत्व स्वीकार कराने की चुनौती अलग होगी। दूसरी तरफ यूकेडी के सामने अपनी संगठनात्मक एकजुटता बनाए रखने का सवाल भी है। क्षेत्रीय दलों के बीच गठबंधन की राजनीति में नेतृत्व और राजनीतिक वर्चस्व को लेकर मतभेद उभरना असामान्य नहीं है। ऐसे में यूकेडी को यह साबित करना होगा कि उसकी पहल केवल चुनावी तालमेल की कवायद नहीं, बल्कि साझा राजनीतिक नेतृत्व तैयार करने का गंभीर प्रयास है।

दरअसल, उत्तराखंड में क्षेत्रीय विकल्प का सवाल केवल चुनाव जीतने का सवाल नहीं है। यह उस राज्य की राजनीतिक पहचान का सवाल भी है, जिसके गठन के पीछे पहाड़ के लोगों की अपनी आकांक्षाएं और संघर्ष जुड़े रहे हैं। अब देखना यह है कि यूकेडी छोटे दलों और निर्दलीयों को एक मंच पर लाकर उस बिखरी हुई क्षेत्रीय राजनीतिक ताकत को कितना संगठित कर पाता है, जो 26 साल बाद भी प्रदेश की राजनीति में अपनी निर्णायक जगह तलाश रही है।

70 सीटें, एक मंच और साझा उम्मीदवार..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

में वापसी की रणनीति बना रही है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में सरकार अपने कामकाज और उपलब्धियों को चुनावी मुद्दा बनाने में जुटी है। भाजपा संगठन चुनावी तैयारियों, बूथ प्रबंधन और सरकार के रिपोर्ट कार्ड के जरिए अपना पक्ष जनता तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा है। दूसरी ओर कांग्रेस के सामने सत्ता विरोधी माहौल को राजनीतिक समर्थन में बदलने और अपने संगठन को मजबूत करने की चुनौती है। प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल, पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत, नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य और प्रीतम सिंह जैसे नेताओं के बीच समन्वय भी पार्टी की रणनीति का महत्वपूर्ण पहलू है। कांग्रेस सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महिला सुरक्षा और कानून व्यवस्था जैसे मुद्दों को उठा रही है।

दोनों दलों के लिए 2027 केवल विधानसभा की 70 सीटों का मुकाबला नहीं है, बल्कि अपने राजनीतिक जनाधार और नेतृत्व की स्वीकार्यता साबित करने का अवसर भी है। उत्तराखंड की राजनीति का एक बड़ा सवाल यह भी है कि क्या भाजपा और कांग्रेस के बीच सत्ता की प्रतिस्पर्धा में प्रदेश के मूल सवाल पीछे छूटते जा रहे हैं? राज्य गठन के समय जिस पहाड़ी अस्मिता, क्षेत्रीय विकास और विकेंद्रीकरण की बात की गई थी, उसका मूल्यांकन आज भी अधूरा है। पलायन की चुनौती, पर्वतीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य और शिक्षा की बदहाल स्थिति, रोजगार का संकट, खेती का सिमटना, जंगली जानवरों से फसलों की सुरक्षा और आपदा प्रबंधन जैसे सवाल आज भी समाधान की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

राजनीतिक दल चुनाव के समय इन मुद्दों को उठाते हैं, लेकिन चुनावी विमर्श अक्सर एक-दूसरे की नीतियों, नेताओं और सरकारों के प्रदर्शन के इर्द-गिर्द केंद्रित हो जाता है। ऐसे में मतदाता के सामने असली सवाल यह है कि सत्ता की लड़ाई में उसके जीवन से जुड़े मुद्दों को कितनी प्राथमिकता मिलती है। उत्तराखंड में तीसरे विकल्प की संभावना को पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता। लेकिन इसके लिए केवल भाजपा और कांग्रेस का विरोध पर्याप्त नहीं होगा। क्षेत्रीय दलों को एक साझा राजनीतिक दृष्टि, मजबूत संगठन, विश्वसनीय नेतृत्व और प्रदेश के ज्वलंत सवालों पर स्पष्ट कार्ययोजना के साथ सामने आना होगा। केवल चुनाव के समय सक्रिय होने से राजनीतिक विकल्प तैयार नहीं होते। इसके लिए लगातार जनसंघर्ष, सामाजिक जुड़ाव और जनता के बीच विश्वसनीयता अर्जित करनी पड़ती है।

आखिरकार उत्तराखंड की राजनीति का भविष्य केवल इस बात से तय नहीं होगा कि 2027 में भाजपा या कांग्रेस में से कौन सत्ता में आता है। बड़ा सवाल यह है कि क्या प्रदेश अपनी क्षेत्रीय राजनीतिक आकांक्षाओं को कोई मजबूत राजनीतिक अभिव्यक्ति दे पाएगा? क्या राज्य आंदोलन से निकले मुद्दे सत्ता की राजनीति के केंद्र में लौटेंगे? या फिर आने वाले वर्षों में भी उत्तराखंड की सियासत दो राष्ट्रीय दलों के बीच ही सत्ता की अदला-बदली और वर्चस्व की लड़ाई में उलझी रहेगी? राज्य को बने 26 साल हो गए, लेकिन राजनीतिक विकल्प का सवाल आज भी वहीं खड़ा है। उत्तराखंड की सियासी धुरी भाजपा और कांग्रेस के बीच घूम रही है। अब देखना यह है कि 2027 का चुनाव इस धुरी को और मजबूत करता है या प्रदेश की राजनीति में किसी नए समीकरण की जमीन तैयार होती है।

सीवर लाइन लीकेज की समस्याओं का जल्द करें समाधानः गणेश जोशी

हमारे संवाददाता

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने आज अपने कैंप कार्यालय में जल संस्थान और जल निगम के अधिकारियों के साथ बैठक कर मसूरी विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र में पेयजल आपूर्ति, सीवर व्यवस्था एवं विभिन्न स्थानों पर सीवर लाइन में हो रही लीकेज की समस्याओं की जानकारी लेते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।



बैठक के दौरान अधिकारियों ने कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी को अवगत कराया कि मसूरी में कुल पांच एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) का निर्माण कार्य किया जा रहा है, जिनमें से दो एसटीपी का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। एक एसटीपी का कनेक्शन किया जाना शेष है, जबकि शेष दो एसटीपी का निर्माण कार्य गतिमान है। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि मसूरी विधानसभा क्षेत्र के जिन-जिन क्षेत्रों में सीवर लाइन क्षतिग्रस्त है अथवा लीकेज की समस्या बनी हुई है, वहां प्राथमिकता के आधार पर तत्काल मरम्मत एवं सुधार कार्य सुनिश्चित किए जाएं। उन्होंने कहा कि सीवर लीकेज के कारण आमजन को किसी प्रकार की असुविधा न हो और स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं उत्पन्न न हों इसका विशेष ध्यान रखा जाए। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि पेयजल और सीवर जैसी मूलभूत सुविधाएं आमजन के दैनिक जीवन से सीधे जुड़ी हैं। इसलिए इनसे संबंधित शिकायतों का त्वरित संज्ञान लेते हुए उनका समयबद्ध निस्तारण किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि निर्माणाधीन एसटीपी के कार्यों में तेजी लाई जाए और जिन एसटीपी का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है, उन्हें आवश्यक कनेक्टिविटी के साथ शीघ्र संचालित किया जाए।

कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि जनसमस्याओं के समाधान में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों से आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए जनता को बेहतर पेयजल एवं सीवर सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश भी दिए। बैठक में जलसंस्थान के अधीक्षण अभियंता संजय सिंह, अधिशासी अभियंता मोनिका वर्मा, जलनिगम के अधीक्षण अभियंता आरके जैन, अधिशासी अभियंता सतेन्द्र पुंडीर सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

इंटर-हाउस संगीत एवं नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन

हमारे संवाददाता

देहरादून। अकेशिया पब्लिक स्कूल में आज इंटर-हाउस संगीत एवं नृत्य प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के चेयरमैन मनमीत सिंह ढिल्लों एवं प्रधानाचार्या पूजा मारिया द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत टेरेसा हाउस की संगीत प्रस्तुति से हुई, जिसके पश्चात विद्यालय के सभी हाउसों ने संगीत एवं नृत्य के माध्यम से अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुतियों में सुर, ताल, लय, भाव एवं उत्साह का सुंदर समन्वय प्रस्तुत कर उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया। प्रतियोगिता में टेरेसा हाउस ने संगीत एवं नृत्य, दोनों विधाओं में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। कार्यक्रम के समापन पर प्रधानाचार्या पूजा मारिया ने सभी प्रतिभागियों की सराहना करते हुए उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन की प्रशंसा की तथा सभी विद्यार्थियों को बधाई दी। उन्होंने ऐसे आयोजनों को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, आत्मविश्वास एवं रचनात्मक प्रतिभा को निखारने का महत्वपूर्ण माध्यम बताया। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त शिक्षकगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम उत्साह, उमंग एवं सांस्कृतिक रंगों से सराबोर रहा।

14 स्थानों पर एक साथ आपदा प्रबंधन की मॉक ड्रिल

◆एसडीआरएफ व एनडीआरएफ ने संभाला मोर्चा

हमारे संवाददाता

नैनीताल। जिले में आज 14 स्थानों पर आपदा प्रबंधन की मॉक ड्रिल शुरू की गयी। मॉक ड्रिल के दौरान भूकंप, भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी एवं अग्निकांड, शॉर्ट सर्किट से आग लगने, सुरंगों में चट्टान टूटने एवं जलभराव, रासायनिक पदार्थों के रिसाव तथा भगदड़ जैसी संभावित आपदा परिस्थितियों का कृत्रिम घटनाक्रम तैयार कर राहत एवं बचाव कार्यों का अभ्यास किया जा रहा।

माक ड्रिल के दौरान बी.डी. पाण्डे जिला चिकित्सालय, नैनीताल भूकंप के झटकों एवं कंपन से उत्पन्न स्थिति, रामदत्त जोशी जिला चिकित्सालय, रामनगर शॉर्ट सर्किट से आग लगने की स्थिति, वॉक-वे मॉल, हल्द्वानी ख़ भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी एवं अग्निकांड से उत्पन्न स्थिति, जमरानी बांध स्थल , सुरंगों में चट्टान टूटने एवं जलभराव से उत्पन्न स्थिति, पेपर मिल, लालकुआं रासायनिक पदार्थों के रिसाव से उत्पन्न स्थिति, श्री कैंचीधाम मंदिर परिसर भगदड़ से उत्पन्न स्थिति, राजकीय इंटर कॉलेज, कालाढूंगी भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी की स्थिति, राजकीय इंटर कॉलेज, कसियालेख भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी की स्थिति, राजकीय इंटर कॉलेज, गरगड़ी भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी की स्थिति, राजकीय इंटर कॉलेज, खैरना भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी की स्थिति, राजकीय इंटर कॉलेज, नथुवाखान भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी की स्थिति, राजकीय इंटर कॉलेज, भवाली भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी की स्थिति, पीएम श्री राजकीय इंटर कॉलेज, रामनगर भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी की स्थिति, एच एन इंटर कॉलेज, हल्द्वानी ख़ भूकंप के पश्चात अफरा-तफरी की स्थिति पर संबंधित उपजिलाधिकारियों एवं तहसील स्तरीय आईआरएस टीमों के नेतृत्व में निर्धारित स्थलों पर राहत एवं बचाव अभियान संचालित किए जा रहे है। मॉक ड्रिल में पुलिस, एसडीआरएफ, एनडीआरएफ, स्वास्थ्य विभाग, अग्निशमन, राजस्व, लोक निर्माण विभाग, विद्युत,प परिवहन, नगर निकायों सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कार्मिक प्रतिभाग कर रहे। अभ्यास के दौरान खोज एवं बचाव कार्यों, घायलों को सुरक्षित निकालने, प्राथमिक उपचार, अस्पताल पहुंचाने, संसाधनों की उपलब्धता तथा विभिन्न विभागों के बीच त्वरित समन्वय एवं प्रभावी प्रतिक्रिया का परीक्षण किया जा रहा है। मॉक ड्रिल के दौरान संचालित राहत एवं बचाव कार्यों का ऑनलाइन मोबाइल लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से भी निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण किया जा रहा है ताकि अभ्यास की प्रभावशीलता का आकलन कर आपदा प्रबंधन व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके। जिलाधिकारी ने जनता से अपील की कि मॉकड्रिल के दौरान किसी भी प्रकार से पैनिक न हों तथा किसी भी प्रकार की अफवाह से बचें और यदि कोई अफवाह फैलती है तो अफवाहों को फैलने से रोकें।

हनीट्रैप में फंसाकर वसूली करने वाली महिला की गिरफ्तारी से रोक हटी!

हमारे संवाददाता

नैनीताल। हल्द्वानी के बुजुर्ग कारोबारी को हनीट्रैप में फंसाकर करोड़ों रुपये की वसूली और संपत्ति हड़पने के मामले में आरोपित महिला ज्योति सिंह को हाई कोर्ट से झटका लगा है। न्यायमूर्ति पंकज पुरोहित की एकलपीठ ने महिला की गिरफ्तारी पर लगी अंतरिम रोक हटाते हुए मुकदमा निरस्त करने की मांग वाली याचिका खारिज कर दी। इससे अब पुलिस के लिए आरोपित महिला की गिरफ्तारी का रास्ता साफ हो गया है।

मामले की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि कारोबारी ने करीब सात करोड़ रुपये की नकदी और संपत्ति गंवाने का आरोप लगाया है। उनका दावा है कि निजी फोटो और वीडियो सार्वजनिक करने की धमकी देकर उनसे करीब पांच करोड़ रुपये नकद और आनलाइन माध्यम से वसूले गए। इसके अलावा लगभग दो करोड़ रुपये बाजार कीमत के चार प्लाट, एक कार और बाइक भी कथित तौर पर ले ली गई। आरोप है कि इतनी बड़ी रकम और संपत्ति लेने के बाद भी वसूली का सिलसिला नहीं थमा।



पिछले दो वर्षों से बेटी की बीमारी और उपचार का हवाला देकर हर महीने 40 हजार रुपये मांगने का आरोप है। इस तरह करीब 9.60 लाख रुपये अतिरिक्त वसूले जाने की बात भी सामने आई है। कारोबारी की शिकायत के मुताबिक, वर्ष 2015 में उनकी मुलाकात ज्योति सिंह से हुई थी। शुरुआत में महिला ने आर्थिक मदद के बहाने उनसे संपर्क बढ़ाया। धीरे-धीरे दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ गईं। कारोबारी का आरोप है कि इसी दौरान महिला और उसके कथित साथियों ने उनकी निजी फोटो और वीडियो तैयार कर लिए। इसके बाद इन्हें परिवार और समाज में प्रसारित करने की धमकी देकर रकम मांगी जाने लगी। वर्ष 2016 में करीब 45 लाख रुपये लेने का आरोप है। कारोबारी के मुताबिक, वर्ष 2016 से 2022 तक महिला से संपर्क नहीं रहा, लेकिन वर्ष 2022 में दोबारा फोन आने लगे और पुरानी फोटो-वीडियो वायरल करने की धमकी देकर वसूली शुरू कर दी गई। आरोप है कि बदनामी और सामाजिक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचने के डर से वह लगातार दबाव में रहे।

कारोबारी ने ज्योति सिंह के अलावा मोहम्मद मुश्ताक, सोमवती समेत अन्य लोगों पर भी इस कथित वसूली में शामिल होने का आरोप लगाया है। शिकायत में कुल छह लोगों की भूमिका पर सवाल उठाए गए हैं।

कारोबारी का आरोप है कि उनकी करीब दो करोड़ रुपये की चार जमीनें भी दबाव बनाकर आरोपितों और उनके परिवार के सदस्यों के नाम कराई गईं। कारोबारी का स्टोन क्रशर, पेट्रोल पंप समेत अन्य व्यावसायिक गतिविधियों से जुड़ाव बताया गया है। उनका दावा है कि लगातार आर्थिक और मानसिक दबाव के कारण उन्हें अपने कारोबार तक से हाथ धोना पड़ा।

फरार हत्यारोपी पुलिस मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

उधमसिंहनगर। रेशमबाड़ी हत्याकांड में फरार चल रहे मुख्य आरोपी को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया है। आज सुबह पुलिस की घेराबंदी के दौरान आरोपी ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में पुलिस की गोली आरोपी के दाहिने पैर में लगी, जिसके बाद उसे घायल अवस्था में गिरफ्तार कर उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान शिवम चंद्रा उर्फ बर्गर (25 वर्ष), पुत्र पप्पू, निवासी रेशमबाड़ी, कोतवाली रुद्रपुर के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक, आरोपी इस हत्याकांड के बाद से फरार चल रहा था और उसकी तलाश में लगातार दबिश दी जा रही थी। रेशमबाड़ी हत्याकांड में पुलिस इससे पहले दो आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी थी, जबकि मुख्य आरोपी शिवम चंद्रा उर्फ बर्गर गिरफ्तारी से बचने के लिए फरार चल रहा था।



आज सुबह पुलिस को मुख्य आरोपी के संबंध में सूचना मिली। इसके बाद कोतवाली रुद्रपुर पुलिस टीम ने रिंग रोड से सरदार के झाले की ओर जाने वाले मार्ग पर घेराबंदी की। पुलिस के अनुसार, खुद को घिरा देखकर आरोपी ने पुलिस टीम पर गोली चला दी। पुलिस ने जवाबी फायरिंग की, जिसमें आरोपी के दाहिने पैर में गोली लगी और उसे मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 315 बोर का एक तमंचा, एक खोखा कारतूस और एक जिंदा कारतूस बरामद किया है। घायल आरोपी को प्राथमिक उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया। पुलिस के अनुसार, पूछताछ में आरोपी ने हत्याकांड में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। रेशमबाड़ी हत्याकांड में मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी को पुलिस बड़ी कामयाबी मान रही है। फिलहाल आरोपी का उपचार जारी है और मामले में आगे की वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

पीआरडी जवानों को फिर मिला सिर्फआश्वासन

◆आज कैंडल मार्च और 30 को सीएम आवास कूच का ऐलान

हमारे संवाददाता

देहरादून। प्रांतीय रक्षक दल के जवानों की दो सूत्रीय मांग पर कल की कैबिनेट में भी कोई सीधा फैसला नहीं आया, जिससे जवानों में भारी नाराजगी है। जवानों की मांग साफ है, साल के 365 दिन नियमित रोजगार मिले और होमगार्ड की तर्ज पर मूल वेतन के साथ महंगाई भत्ता दिया जाए।



जवानों का कहना है कि वे चारधाम यात्रा, ट्रैफिक, चुनाव, मेलों और सरकारी दफ्तरों में सालभर काम करते हैं, लेकिन उन्हें सिर्फ कुछ महीनों की ड्यूटी मिलती है, जिससे परिवार चलाना मुश्किल हो जाता है। इससे पहले 18 नवंबर को देहरादून में जवानों ने सीएम आवास कूच किया था, 19 नवंबर को उन्होंने निदेशालय में तालाबंदी की थी। सीएम धामी ने होमगार्ड की तर्ज पर डीए के लिए समिति गठित करने को मंजूरी दी है। लेकिन जवानों का कहना है कि जब तक शासनादेश नहीं आता, आंदोलन जारी रहेगा। इसी के तहत आज 28 नवंबर को प्रदेशभर में कैंडल मार्च निकाला जाएगा और 30 नवंबर को फिर सीएम आवास कूच किया जाएगा। पौड़ी में संगठन के पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष संपूर्ण सिंह ने कहा है कि कई कैबिनेट बैठकों में प्रस्ताव लाने का आश्वासन मिला, पर हर बार टाल दिया गया।

कैंटर खाई गिरा, चालक की मौत

हमारे संवाददाता

अल्मोड़ा। सड़क दुर्घटना में आज सुबह एक कैंटर के खाई में गिर जाने से चालक की मौके पर ही मौत हो गयी। सूचना मिलने पर फायर सर्विस व एसडीआरएफ ने मौके पर पहुंच कर रेस्क्यू अभियान चलाकर चालक के शव को बाहर निकालकर स्थानीय पुलिस के हवाले किया जिस पर अग्रिम कार्यवाही जारी है।



दिनांक 28 नवंबर 2026 को डीसीआर अल्मोड़ा से एसडीआरएफ पोस्ट भिकियासैंण को सूचना प्राप्त हुई कि टोटाम चेरीधार के समीप एक कैंटर वाहन अनियंत्रित होकर गहरी खाई में गिर गया है। वाहन में चालक के सवार होने की सूचना पर अपर उप निरीक्षक सुंदर बोरा के नेतृत्व में एसडीआरएफ टीम तत्काल रेस्क्यू उपकरणों के साथ घटनास्थल के लिए रवाना हुई। घटनास्थल पर पहुँचने पर वाहन अत्यंत गहरी खाई में गिरा हुआ पाया गया।

वाहन में सवार चालक की तलाश के लिए एसडीआरएफ एवं फायर सर्विस की संयुक्त टीम द्वारा सर्च एवं रेस्क्यू अभियान चलाया गया। दुर्गम परिस्थितियों और खाई की गहराई के बीच लगातार अभियान चलाते हुए टीम ने लगभग 200 मीटर गहरी खाई से चालक का शव बरामद किया। मृतक की पहचान हीरा सिंह (उम्र 35 वर्ष), पुत्र वीरेंद्र सिंह, निवासी नंदप्रयाग घाट, जनपद चमोली के रूप में हुई। एसडीआरएफ टीम द्वारा शव को खाई से बाहर निकालकर आवश्यक वैधानिक कार्रवाई हेतु जिला पुलिस के सुपुर्द किया गया।

वन विभाग में फर्जी दस्तावेजों से नौकरी पाने का आरोप

◆वन दरोगा से लेकर डिप्टी रेंजर तक जांच के घेरे में

हमारे संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में फर्जी दस्तावेजों के आधार पर सरकारी नौकरी हासिल करने की शिकायतें अब वन विभाग में भी सामने आने लगी हैं। शिक्षा विभाग के बाद अब वन विभाग में वन दरोगा, वन आरक्षी और डिप्टी रेंजर की नियुक्तियों को लेकर सवाल उठ रहे हैं। लगातार मिल रही शिकायतों के बाद विभाग ने सख्ती दिखाते हुए नोटिस जारी करने की कार्रवाई शुरू कर दी है।

वन विभाग में फर्जी दस्तावेजों के आधार पर नौकरी हासिल करने की शिकायतों की फेहरिस्त लगातार लंबी होती जा रही है। विभाग की ओर से एक वन आरक्षी को नोटिस जारी किया जा चुका है, जबकि एक डिप्टी रेंजर के खिलाफ शिकायत मिलने के बाद नोटिस भेजने की तैयारी की जा रही है।

इसके अलावा दो वन दरोगाओं के खिलाफ भी विभाग को शिकायतें मिली हैं। इनमें से एक वन दरोगा के संबंध में हाल ही में हरिद्वार से शिकायत प्राप्त हुई है, जिस पर विभाग जल्द निर्णय ले सकता है। वहीं, एक अन्य वन आरक्षी के खिलाफ विभागीय कार्रवाई के बाद मामला न्यायालय में विचाराधीन है।



विभाग को मिली शिकायतों में फर्जी जाति प्रमाणपत्र, शैक्षिक योग्यता से जुड़े प्रमाणपत्रों में गड़बड़ी और सरकारी नौकरी हासिल करने के लिए गलत शपथपत्र प्रस्तुत करने जैसे गंभीर आरोप शामिल हैं। ऐसे में नियुक्ति के दौरान प्रस्तुत किए गए शैक्षिक दस्तावेजों के साथ ही आरक्षण का लाभ लेने के लिए लगाए गए प्रमाणपत्रों की प्रामाणिकता पर भी सवाल उठ रहे हैं। वन विभाग के सीसीएफ एचआरडी विभाग इन मामलों को गंभीरता से ले रहा है और कुछ प्रकरणों में नोटिस भी जारी किए गए हैं।

उत्तराखंड में इससे पहले शिक्षा विभाग में फर्जी प्रमाणपत्रों के आधार पर नौकरी हासिल करने के कई मामले सामने आ चुके हैं। जांच के बाद कई शिक्षकों को बर्खास्त भी किया गया है। अब वन विभाग में लगातार मिल रही शिकायतों ने नियुक्ति प्रक्रिया और दस्तावेजों के सत्यापन पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। बड़ा सवाल यह है कि नियुक्ति के समय प्रमाणपत्रों का सत्यापन किस स्तर पर किया गया था और यदि जांच में गड़बड़ी की पुष्टि होती है तो इसकी जिम्मेदारी किसकी तय होगी।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।